जनसंख्या विस्फोट
समस्या और समाधान

जन-संख्या विस्फोट:

समस्या और समाधान

•

भगवान् श्री रजनीश

•

संकलन : स्वामी धर्म सरस्वती

सम्पादन : स्वामी योग चिन्मय

भूमिका : चन्द्रकान्ती सकीम

जीवन जागृति आन्दोलन प्रकाशन, बम्बई

१९७३

प्रकाशक :
श्री ईश्वरलाल एन. शाह,
(साधु ईश्वर समर्पण)
मंत्री, जीवन जागृति केंद्र,
३१, इजरायल मोहल्ला,
भगवान भुवन, मस्जिद बन्दर रोड,
बम्बई–९.

•

जीवन जागृति केंद्र, बम्बई

•

प्रथम संस्करण : जनवरी, १९७१
प्रतियां : ३०००
द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण : जनवरी, १९७३
प्रतियां : ५०००

मूल्य : [illegible]

•

मुद्रक :
अशोक प्रिंटिंग प्रेस
२०१, खेतवाडी मेन रोड,
बम्बई–४.

जनसंख्या विस्फोट

समस्या और समाधान

[भगवान् श्री रजनीश द्वारा जबलपुर में दिया गया एक प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर–चर्चा]

अन्तर्वस्तु अनुक्रम

⊙ ⊙ भूमिका

हार्वर्ड – विश्वविद्यालय के रसायन विद प्रो. वुडवर्ड से अभी–अभी भारत की मुलाकात के समय भारत की समस्या के बारे में पूछा गया....

उन्होंने कहा–पहले तो हमें वास्तविक समस्याएं छांटनी होगी, यदि हमने समस्याओं की पहचान कर ली, तो आधी समस्या हल समझिए.

आज भारत के सामने सबसे बड़ा सवाल तो समस्याएं ठीकसे छांटने की है। प्रस्तुत संकलन में भगवान श्री ने अपनी गहनतम् दृष्टि और असाधारण तर्क से जनसंख्या की वृद्धि कितनी विकराल समस्या है यह बताने की कोशिश की है।

दो दशकों के अनुभव के आधार पर स्वीकार किया जा रहा है कि आबादी के विस्फोट और उससे उत्पन्न संकट को टालने के लिए अब कुछ ठोस परिणाम प्राप्त किये जाने चाहिए। १९६१ से १९७१ के बीच रोजगार की संभावना १५.२ प्रतिशत बढ़ी, जबकि इस समय के बीच जनसंख्यामें २४.८ प्रतिशत की वृद्धि हुई, जनगणना के इन आंकडो सें पता चलता है कि अपने देश में विकास और आवादी के सवाल जोडने की कोई रचनात्मक कोशिश नहीं की गयी। अमरीका आदि देशों में जब 'एक बच्चा बस' का आंदोलन चल रहा है तब आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ १०२ नम्बर के स्थान पर दुनिया में खडा हुआ भारत के लिए जनसंख्या की समस्या को पहचानना कितना जरुरी है! फिर भी परिवार नियोजन आन्दोलन इतना गतिहीन क्यों?

सरकार में बैठे नेताओं को, राजनीतिक अखाड़े के पहलवानों को पछाड़ने के लिए कसरत करने, तेल मालिश करने और दांव-पेच सीखने से फुर्सत नही। एक प्रदेश के नेता नें स्वीकार भी किया है कि उसका काफी समय इस राजनीतिक अखाड़ेबाजी में जा रहा है ऐसी स्थिति में यदि परिवार नियोजन आंदोलन गति-हीन रहे तो कोई आश्चर्य नहीं।

खाद्य विज्ञान के प्रो. बोर्गस्ट्रोम के अनुसार तो यही दशक है जिसमें प्रभावशाली कदम उठाये जाने चाहिए, ताकि अगली सदी में संतुलन कायम किया जा सके। यदि ऐसा नहीं किया गया तो इसके परिणाम बेहद खतरनाक हो सकते हैं।

प्रस्तुत प्रवचन की विशेषता यह है कि यहांपर पहली बार एक धर्मगुरु द्वारा न सिर्फ परिवार नियोजन आन्दोलन का सशक्त समर्थन किया गया है, बल्कि इस आन्दोलन का आर्थिक पहलू के अलावा धार्मिक पहलू भी उद्घाटित किया गया है।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न की चर्चा प्रस्तुत प्रवचन में संयोगवश रह गई है। पश्चिम के जिन मुल्कों में परिवार नियोजन आंदोलन सफल हो रहा है वहां यौन रोग की वृद्धि होती रही है, इसका क्या इलाज है?

इस प्रश्न का उत्तर बडे रोचक ढंग से इसी पुस्तिका में इन शब्दों के साथ दिया गया है— "परिवार नियोजन से नयी व्यवस्था आयेगी। जरूरी नहीं कि नयी व्यवस्था सुख ही लायेगी, लेकिन कमसे कम पुराना दुख तो न होगा। दुख भी होंगे तो नये होंगे, और जो नये दुख खोज सकता है वह नये सुख भी खोज सकेगा।"

असल में नये खोज की हिम्मत जुटानी जरुरी है।

–चन्द्रकान्त भकोम

१ सरीसृप प्राणियों का विनाश—अधिक संख्या के कारण

पृथ्वी के नीचे दबे हुए, पहाड़ों की कंदराओं में छिपे हुए, समुद्र की सतह में खोजे गये बहुत से ऐसे पशुओं के अस्थिपंजर मिले हैं, जिनका अब कोई निशान शेष नहीं रह गया। वे कभी थे। आज से दस लाख साल पहले पृथ्वी बहुत से सरीसृप प्राणयों भरी हुई थी। लेकिन, आज हमारे घर में छिपकली के अतिरिक्त उनका कोई प्रतिनिधि नहीं है। छिपकली भी बहुत छोटा प्रतिनिधि है। दस लाख साल पहले उसके पूर्वज हाथियों से भी पांच गुने और दस गुने बड़े थे। वे सब कहां खो गये, इतने शक्तिशाली पशु पृथ्वी से कैसे विलुप्त हो गये ? किसी ने उन पर हमला किया ? किसी ने उन पर एटम बम, हाइड्रोजन बम गिराये ? नहीं, उनके खत्म होने की अद्भुत कथा है।

उन्होंने कभी सोचा भी न होगा कि वे खत्म हो जावेंगे। **वे खत्म हो गये, अपनी संतति के बढ़ जाने के कारण।** वे इतने बढ़ गये कि पृथ्वी पर जीना उनके लिए असम्भव हो गया। भोजन कम हुआ, पानी कम हुआ, 'लिव्हिंग स्पेस' कम हुआ, जीने के लिए जितनी जगह चाहिए वह कम हो गयी। उन पशुओं को विलकुल आमूल नष्ट हो जाना पड़ा।

२ मृत्यु-दर का घटना और जन्म-दर का बढ़ना

ऐसी दुर्घटना आज तक मनुष्य जाति के जीवन में नहीं आयी है; लेकिन भविष्य में आ सकती है। आज तक नहीं आयी, उसका कारण यह था कि प्रकृति ने निरन्तर मृत्यु को और जन्म को संतुलित रखा था। बुद्ध के जमाने में दस आदमी पैदा होते थे, तो सात या आठ जन्म के बाद मर जाते थे। दुनिया की आबादी कभी इतनी नहीं बढ़ी थी कि भोजन की कमी पड़ जाय, खाने की कमी पड़ जाय। विज्ञान और आदमी की निरंतर खोज ने और मृत्यु से लड़ाई लेने की होड़ ने यह स्थिति

पैदा कर दी है कि आज दस बच्चे पैदा होते हैं, तो उनमें से मुश्किल से एक बच्चा मर पाता है। स्थिति बिल्कुल उल्टी हो गयी है। उम्र भी लम्बी हुई। आज रूस में डेढ़ सौ वर्ष की उम्र के भी हजारों लोग हैं। औसत उम्र अस्सी और बयासी वर्ष तक कुछ मुल्कों में पहुँच गयी है। स्वाभाविक परिणाम जो होना था वह यह हुआ कि **जन्म की दर तो पुरानी रही, किन्तु मृत्यु की दर हमने कम कर दी।** अकाल होते थे; किंतु अकाल में मरना हमने बंद कर दिया। महामारियां आती थीं, प्लेग होता था, मलेरिया होता था, हैजा होता था, वे सब हमने बन्द कर दिये। **हमने मृत्यु के बहुत से द्वार रोक दिये और जन्म के सब द्वार खुले छोड़ दिये।** मृत्यु और जन्म के बीच जो संतुलन था, वह विलुप्त हो गया।

३ जनसंख्या की अधिकता से मनुष्य-जाति के अस्तित्व को खतरा

१९४५ में हिरोशिमा व नागासाकी में एटम-बम गिरे, उनसे एक लाख आदमी मरे। इस समय लोगों को खतरा है कि एटम बम बनते चले गये, तो सारी दुनिया नष्ट हो जायेगी। लेकिन, आज जो लोग समझते हैं, वे कहते हैं कि दुनिया के नष्ट होने की सम्भावना एटम बम से बहुत कम है, दुनिया के नष्ट होने की नयी सम्भावना है, वह है—लोगों के पैदा होने से। एक एटम बम गिरा कर हिरोशिमा में एक लाख आदमी हमने मारे; लेकिन **हम प्रतिदिन डेढ़ लाख आदमी सारी दुनिया में बढ़ा लेते हैं। एक हिरोशिमा क्या, दो हिरोशिमा रोज हम पैदा कर लेते हैं।** दो लाख आदमी प्रतिदिन बढ़ जाते हैं। इसका डर है कि यदि इसी तरह संख्या बढ़ती चली गयी, तो इस सदी के पूरे होते-होते हिलने के लिये भी जगह शेष न रह जायगी, और तब सभाएं करने की जरूरत नहीं रह जायगी; क्योंकि तब हम लोग चौबीस घंटे सभाओं में होंगे। आदमी को न्यूयॉर्क और बम्बई में चौबीसों घंटे हिलने की फुरसत नहीं है। उसे सुविधा नहीं है, अवकाश नहीं है।

इस समय सबसे बड़ी चिंता, जो मनुष्य जाति के हित के सम्बन्ध में सोचते हैं, उन लोगों के समक्ष अतितीव्र हो जाना सुनिश्चित है कि यदि हमने मृत्यु-दर को रोक दिया और जन्म-दर को पुराने रास्ते से चलने दिया, तो **बहुत डर है कि पृथ्वी हमारी संख्या से ही डूब जाय और नष्ट हो जाय।** हम इतने ज्यादा हो गये हैं कि जीना असम्भव हो गया है। इसलिए जो भी विचारशील हैं, वे यही कहेंगे कि **जिस भांति हमने मृत्यु-दर को रोका है, उसी भांति जन्म-दर को भी रोकना बहुत महत्वपूर्ण है।**

पहली बात तो यह ध्यान में रख लेनी है कि जीवन एक अवकाश चाहता है। जंगल में जानवर मुक्त है, मीलों के घेरे में घूमता है, दौड़ता है। उसे कटघरे में बंद कर दें, तो उसका विक्षिप्त होना शुरू हो जाता है। बन्दर भी मीलों नाचा करते हैं। पचास बन्दरों को एक मकान में बंद कर दें, तो उनका पागल होना शुरू हो जायगा। प्रत्येक बन्दर को एक 'लिव्हिग स्पेस', खुली जगह चाहिए, जहां वह जी सके। अब लंदन, मास्को, न्यूयॉर्क या वाशिंगटन में 'लिव्हिग स्पेस' खो गयी है। छोटे-छोटे कटघरों में आदमी बंद हैं। एक-एक घर में, एक-एक कमरे में दस-दस, बारह-बारह लोग बंद हैं। वहां वे पैदा होते है, वहीं मरते हैं, वहीं वे भोजन करते हैं, वहीं बीमार पड़ते हैं। एक-एक कमरे में दस-दस, बारह-बारह, पंद्रह-पंद्रह लोग बन्द हैं। अगर वे विक्षिप्त हो जायें, तो कोई आश्चर्य नहीं, अगर वे पागल हो जायें, तो कोई आश्चर्य नहीं। वे पागल होंगे ही। वे पागल नहीं हो रहे हैं, यही आश्चर्य है। इतने कम पागल हो पा रहे हैं, यही आश्चर्य है।

४ बढ़ती भीड़ के साथ बढ़ते हुए मानासिक तनाव

मनुष्य को खुला स्थान चाहिए जीने के लिए, लेकिन संख्या जब ज्यादा हो जाय, तो यह बुराई हमें ख्याल में नहीं आती। जब आप एक कमरे में होते हैं, तब आप एक मुक्ति अनुभव करते हैं। दस लोग आकर कमरे में सिर्फ बैठ जावें, कुछ न करें, तो भी आपके मस्तिष्क में एक अनजाना भार बढ़ना शुरू हो जाता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि चारों तरफ बढ़ती हुई भीड़ का प्रत्येक व्यक्ति के मन पर एक अनजाना भार है। आप रास्ते पर चल रहे हैं, अकेले, कोई भी उस रास्ते पर नहीं है, तब आप दूसरे ढंग के आदमी होते हैं, और फिर उस रास्ते पर दो आदमी बगल की गली से निकल कर आ जाते हैं, तो आप दूसरे ढँग के आदमी हो जाते हैं। **उनकी मौजदगी आपके भीतर कोई तनाव पैदा कर देती है।**

आप अपने बाथरूम (स्नान कक्ष) में होते हैं, तब आपने ख्याल किया है कि आप वही आदमी नहीं होते, जो बैठक घर में होते हैं। बाथरूम में आप बिलकुल दूसरे आदमी होते हैं। बूढ़ा भी बाथरूम में बच्चे जैसा उन्मुक्त हो जाता है। बूढ़े भी बाथ-रूम के आइने में बच्चे जैसी जीभ दिखाते हैं, मुहं चिढ़ाते हैं। नाच भी लेते हैं। लेकिन, अगर उन्हें पता चल जाय कि किसी छेद से कोई झांक रहा है, तो फिर वे एकदम बूढ़े हो जावेंगे, उनका बचपना खो जावेगा। फिर वे सख्त और मजबूत होकर बदल जावेंगे।

हम कुछ क्षण चाहिए, जब हम बिलकुल अकेले हो सकें। **मनुष्य की आत्मा के जो श्रेष्ठतम फूल हैं, वे एकान्त और अकेले में ही खिलते हैं।** काव्य, संगीत अथवा परमात्मा की प्रतिध्वनि, सब एकान्त और अकेले में ही मिलती है। आज तक जगत् में भीड़-भाड़ में कोई श्रेष्ठ काम नहीं हुआ, भीड़ ने अब तक कोई श्रेष्ठ काम किया ही नहीं। जो भी जगत् में श्रेष्ठ है—कविता, चित्र, संगीत, परमात्मा, प्रार्थना, प्रम वे सब एकान्त में और अकेले में ही फूले हैं। लेकिन, वे सब फूल शेष न रह जायेंगे। मुर्झा जायेंगे मुर्झा रहे ही हैं, वे सब मिट जायेंगे। सब लुप्त हो जायेंगे, क्योंकि आदमी श्रेष्ठ से रिक्त हो जायगा।

५ भीड में व्यक्ति के विवेक का नष्ट हो जाना

भीड़ चारों तरफ से अनजान दबाव डाले हुए है। सब तरफ आदमी ही आदमी है। बड़े मजे की बात यह है कि **आदमी जितने बढ़ते हैं, व्यक्तित्व उतना ही कम हो जाता है।** भीड़ में कोई आदमी Individual नहीं होता, व्यक्ति नहीं होता। भीड़ में निजता मिट जाती है, Individuality मिट जाती है। स्वयं का बोध कम हो जाता है, आप अकेले नहीं, मात्र भीड़ के अंग होते हैं। इसलिये भीड़ बुरे काम कर सकती है। अकेला आदमी इतने बुरे काम नहीं कर पाता। अगर किसी मस्जिद को जलाना हो, तो अकेला आदमी (हिन्दू) उसे नहीं जला सकता, चाहे वह कितना हो पक्का हिन्दू क्यों न हो। अगर किसी मंदिर में राम की मूर्ति तोड़नी हो, तो अकेला मुसलमान नहीं तोड़ सकता, चाहे वह कितना ही पक्का मुसलमान क्यों न हो, उसके लिए भीड़ चाहिए। अगर बच्चों की हत्या करनी हो, स्त्रियों के साथ बलात्कार करना हो और जिन्दा आदमियों में आग लगानी हो, तो अकेला आदमी बहुत कठिनाई अनुभव करता है, लेकिन भीड़ एकदम सरलता से करवा लेती है। क्यों? क्योंकि, भीड़ में कोई व्यक्ति नहीं रह जाता और जब व्यक्ति नहीं रह जाता, तो दायित्व, Responsibility भी बिदा हो जाती है। तब हम कह सकते हैं कि हमने नहीं किया, आप भी भीड़ में सम्मिलित थे। कभी आपने देखा की भीड़ तेजी से चल रही हो, नारे लगा रही हो, तो आप भी नारे लगाने लगते हैं और आप भी तेजी से चलने लगते हैं। तेजी से चलती भीड़ में आपके पैर भी तेज हो जाते हैं। नारा लगाती भीड़ में आपका नारा भी लगने लगता है।

६ भीड़ में व्यक्ति का आत्मिक-ह्रास

एडॉल्फ हिटलर ने अपनी आत्म-कथा में लिखा है कि शुरू-शुरू में मेरे पास बहुत थोड़े लोग थे, दस-पंद्रह लोग थे। लेकिन, दस-पंद्रह लोगों से हिटलर, कैसे हुकूमत पर पहुंचा ? यह अजीब कथा है। हिटलर ने लिखा है कि मैं अपने दस-पंद्रह लोगों को ही लेकर सभा में पहुंचता था। उन पंद्रह लोगों को अलग-अलग कोनों पर खड़ा कर देता था और जब मैं बोलता था, तो उन पंद्रह लोगों को पता था कि कब ताली बजानी है, वे पंद्रह लोग ताली बजाते थे और बाकी भीड़ भी उनके साथ हो जाती थी। बाकी भीड़ भी ताली बजाती थी। कभी आपने ख्याल किया है कि जब आप भीड़ में ताली बजाते हैं, तो आप नहीं बजाते, भीड़ बजवा लेती है आपसे। जब आप भीड़ में हंसते हैं, तो भीड़ ही आपको हंसा देती है। **भीड़ संक्रामक है, वह कुछ भी करवा लेती है।** क्योंकि, वह व्यक्ति को मिटा देती है, वह व्यक्ति की आत्मा को, जो उसका अपना होना है, उसे पोंछ डालती है।

अगर पृथ्वी पर भीड़ बढ़ती गयी, तो व्यक्ति बिदा हो जावेंगे, भीड़ रह जायेगी, व्यक्तित्व क्षीण हो जायेगा, खत्म हो जायेगा, मिट जायेगा। यह भी सवाल नहीं है कि पृथ्वी आगे इतने जीवों को पालने में असमर्थ होगी। अगर हमने सब उपाय भी कर लिए, समुद्र से भोजन निकाल लिया, निकाल भी सकेंगे; क्योंकि मजबूरी होगी, कोई उपाय सोचना पड़ेगा। समुद्र से भोजन निकल सकेगा। हो सकता है, हवा से भी खाना निकाला जा सके, और यह भी हो सकता है कि मिट्टी से भी हम भोजन ग्रहण कर सकें। यह सब हो सकता है। सिर्फ गोलियां खाकर ही आदमी जिंदा रह सकता है। **भीड़ बढ़ती गई, तो भोजन का कोई हल तो हम कर लेंगे, लेकिन आत्मा का हल नहीं हो सकेगा।** इसलिये मेरे सामने परिवार नियोजन केवल आर्थिक मामला नहीं है, बहुत गहरे अर्थों में धार्मिक मामला है।

भोजन तो जुटाया जा सकेगा, उसमें बहुत कठिनाई नहीं है। भोजन की कठिनाई अगर लोग समझते हैं, तो बिलकुल गलत समझते हैं। अभी समुद्र भरे पड़े हैं। अभी समुद्रों में बहुत भोजन है। वैज्ञानिक प्रयोग यह कह रहे हैं कि समुद्रों के पानी से बहुत भोजन निकाला जा सकता है। आखिर मछली भी तो समुद्र से भोजन ले रही है। लाखों तरह के जानवर समुद्र से, पानी से भोजन ले रहे हैं। हम भी पानी से भोजन निकाल सकते हैं। हम मछली को खा लेते हैं, तो हमारा भोजन बन जाता है। और मछली ने जो भोजन लिया, वह पानी से लिया। अगर हम एक ऐसी मशीन बना सकें, जो मछली का काम कर सके, तो **हम पानी से सीधा**

भोजन पैदा कर लेंगे। आखिर मछली भी एक मशीन का काम करती है। गाय घास खाती है, हम गाय का दूध पी लेते हैं। हम सीधा घास खावें तो मुश्किल होगी, बीच में मध्यस्थ गाय चाहिए। गाय घास को इस हालत में बदल देती है कि हमारे भोजन के योग्य हो जाय। आज नहीं तो कल, हम मशीन की गाय भी बना लेंगे, जो घास को इस हालत में बदल दे कि हम उसको खा लें। तब दूध जल्दी ही बन सकेगा। जब व्हेजिटेबल घी बन सकता है, तो व्हेजिटेबल दूध क्यों नहीं बन सकता ? कोई कठिनाई नहीं है। भोजन का मसला तो हल हो जायेगा। लेकिन, असली सवाल भोजन का नहीं है। असली सवाल ज्यादा गहरे हैं।

अगर आदमी की भीड़ बढ़ती जाती है, तो पृथ्वी कीड़े-मकोड़ों की तरह आदमियों से भर जावेगी। इससे आदमी की आत्मा खो जावेगी और उस आत्मा को देने का विज्ञान के पास कोई उपाय नहीं है। आत्मा खो ही जायेगी और अगर भीड़ बढ़ती जाती है, तो एक-एक व्यक्ति पर चारों तरफ से बहुत अनजाना दबाव पड़ेगा। हमें अनजाने दबाव कभी दिखाई नहीं पड़ते। आप जमीन पर चलते हैं, आपने कभी सोचा कि जमीन का 'ग्रेव्हिटेशन (गुरुत्वाकर्षण) आपको खींच रहा है ! हम बचपन से ही इसके आदी हो गये हैं, इससे हमें पता नहीं चलता, लेकिन जमीन का बहुत बड़ा आकर्षण हमें पूरे वक्त खींचे हुये है। अभी चांद पर जो यात्री गये हैं, उन्हें पता चला कि जमीन उन्हें लौटकर वैसी नहीं लगी, जैसी पहले लगती थी। चांद पर वे यात्री साठ फीट छलांग भी लगा सकते हैं; क्योंकि चांद की पकड़ बहुत कम है। चांद बहुत नहीं खींचता, जमीन बहुत जोर से खींच रही है। हवाएँ चारों तरफ से दबाव डाले हुये हैं, लेकिन उनका हमें पता नहीं चलता; क्योंकि हम उसके आदी हो गये हैं।

और बहुत-से अनजाने मानसिक दबाव भी हैं। गुरुत्वाकर्षण तो भौतिक दबाव हैं; लेकिन चारों तरफ से लोगों की मौजूदगी भी हमको दबा रही है, वे भी हमें भीतर की तरफ प्रेस कर (दबा) रहे हैं। सिर्फ उनकी मौजूदगी भी हमें परेशान किये हुए है। अगर यह भीड़ बढ़ती चली जाती है, तो एक सीमा पर पूरी मनुष्यता के 'न्यूरॉटिक' (विक्षिप्त) हो जाने का डर है। सच तो यह है कि आधुनिक मनो-विज्ञान, मनोविश्लेषण यह कहता है कि जो लोग पागल हुए जा रहे हैं, उन पागल होने वालों में नब्बे प्रतिशत पागल ऐसे हैं, जो भीड़ के दबाव को नहीं सह पा रहे हैं। दबाव चारों तरफ से बढ़ता चला जा रहा है, और भीतरी दबाव को सहना मुश्किल हुआ जा रहा है, उनके मस्तिष्क की नसें फटी जा रही हैं। इसलिए, बहुत गहरे में सवाल सिर्फ मनुष्य के Physical Survival (शारीरिक बचाव) का ही नहीं है, उसके आत्मिक बचाव का भी है।

७ जनसंख्या के विस्फोट से धर्म को खतरा

जो लोग यह कहते हैं कि संतति नियमन जैसी चीजें अधार्मिक हैं, उन्हें धर्म का कोई पता ही नहीं है, क्योंकि **धर्म का पहला सूत्र है कि व्यक्ति को व्यक्तित्व मिलना चाहिये और व्यक्ति के पास एक आत्मा होनी चाहिये। व्यक्ति भीड़ का हिस्सा न रह जाय।** लेकिन, जितनी भीड़ बढ़ेगी उतना ही हम व्यक्तियों की फिक्र करने में असमर्थ हो जायेंगे। जितनी भीड़ ज्यादा हो जावेगी, उतनी हमें भीड़ की फिक्र नहीं करनी पड़ेगी। जितनी भीड़ बढ़ जायेगी, उतनी ही हमें पूरे-के-पूरे जगत् की इकट्ठी फिक्र करनी पड़ेगी। फिर यह सवाल नहीं होगा कि आपको कौन-सा भोजन प्रीतिकर है, और कौन-से कपड़े प्रीतिकर हैं और कैसा मकान प्रीतिकर है, तब ये सवाल नहीं हैं। कैसा मकान दिया जा सकता है भीड़ को, कैसे कपड़े दिये जा सकते हैं भीड़ को, कैसा भोजन दिया जा सकता है भीड़ को, यह सवाल होगा। तब व्यक्ति का सवाल बिदा हो जाता है और भीड़ के एक अंश की तरह आपको भोजन, कपड़ा और अन्य सुविधाएँ दी जा सकती हैं।

अभी एक मित्र जापान से लौटे हैं, वे कह रहे थे कि जापान में घरों की कितनी तकलीफ है। भीड़ बढ़ती चली जा रही है। एक नये तरह के पलंग उन्होंने ईजाद किये हैं। आज नहीं कल हमें भी ईजाद करने पड़ेंगे। वे **'मल्टी-स्टोरी' पलंग, रात आप अकेले सो भी नहीं सकते।** सब खाटें एक साथ जुड़ी हुई हैं, एक के ऊपर एक। रात में जब आप सोते हैं, तो अपने नम्बर की खाट पर चढ़ कर सो जाते हैं। **आप सोने में भी भीड़ के बाहर नहीं रह सकेंगे,** क्योंकि भीड़ बढ़ती चली जा रही है। वह रात आपके सोने के कमरे में भी मौजूद हो जायगी। पर दस आदमी एक ही खाट पर सो रहे हों, तो वह घर कम रह गया—रेलवे कम्पार्टमेंट ज्यादा हो गया। रेलवे कम्पार्टमेंट में भी अभी 'टेन-टायर' नहीं हैं। लेकिन दस में भी मामला हल नहीं हो जायगा। अगर यह भीड़ बढ़ती जाती है तो वह सब तरफ व्यक्ति का 'एन्क्रोचमेंट' करेगी, वह व्यक्ति को सब तरफ से घेरेगी, सब तरफ से बंद करेगी। और हमें ऐसा कुछ करना पड़ेगा कि व्यक्ति धीरे-धीरे खोता ही चला जाय, उसकी चिंता ही बंद कर देनी पड़े।

मेरी दृष्टि में मनुष्य की संख्या का विस्फोट, जनसंख्या का विस्फोट बहुत गहरे अर्थों में धार्मिक सवाल है, सिर्फ भोजन का आर्थिक सवाल नहीं है।

८ आज जनसंख्या का बढ़ना आत्मघातक

दूसरी बात ध्यान देने और सोचने की है कि आदमी ने अब तक जो जीवन

व्यवस्था की थी, सामाजिक व्यवस्था की थी, उनकी सारी परिस्थितियां अब बदल गयी हैं। अब कोई परिस्थिति वही नहीं रह गयी है, जो आज से पाँच हजार साल पहले मनु के जमाने में थी। **जब परिस्थितियां बदल जाती हैं, तब पुराने नियम बिदा हो जाते हैं।** लेकिन, आज भी घर में एक बच्चा पैदा होता है, तो हम बैंड बाजा बजवाते हैं। शोरगुल करते हैं, प्रसाद बांटते हैं। पांच हजार साल पहले बिलकुल ऐसी ही बात थी, क्योंकि पांच हजार साल पहले दस बच्चे पैदा होते थे, तो सात और आठ तो मर जाते थे और उस समय एक बच्चे का पैदा होना बड़ी घटना थी। समाज के लिए उसकी बड़ी जरूरत थी। क्योंकि समाज में बहुत थोड़े लोग थे। लोग ज्यादा होना चाहिए, नहीं तो पड़ोसी शत्रु के हमले में जीतना मुश्किल हो जायगा। एक व्यक्ति का बढ़ जाना बड़ी ताकत थी, क्योंकि व्यक्ति ही अकेली ताकत था। व्यक्ति से लड़ना था, पास के कबीले से हारना संभव हो जाता अगर संख्या कम हो जाती, तब संख्या को बढ़ाने की कोशिश करना जरूरी था। संख्या जितनी बढ़ जाय, उतना कबीला मजबूत हो जाता था। इसलिए संख्या का बड़ा महत्त्व था। लोग कहते थे कि हम इतने करोड़ हैं। उसमें बड़ी अकड़ थी, उसमें बड़ा अहंकार था, लेकिन वक्त बदल गया, हालतें बिलकुल उल्टी हो गयी हैं, नियम पुराना चल रहा है, हालतें बिलकुल उल्टी हो गयी हैं।

अब जो जितनी ज्यादा संख्या में है, वह उतनी ही जल्दी मरने के उपाय में है। तब जो जितनी ज्यादा संख्या में था, उतनी ज्यादा उसके जीतने की सम्भावना थी। आज संख्या जितनी ज्यादा होगी, मृत्यु उतनी ही नजदीक हो जायगी। **आज जनसंख्या का बढ़ना स्युसाइडल है, आत्मघाती है।** आज कोई समझदार मुल्क अपनी संख्या नहीं बढ़ा रहा है, बल्कि समझदार मुल्कों, में संख्या गिरने तक की सम्भावना पैदा हो गयी है, जैसे फ्रांस में। फ्रांस की सरकार थोड़ी चिंतित हो गयी है, क्योंकि संख्या कहीं ज्यादा न गिर जाय, यह डर भी पैदा हो गया है। लेकिन, **कोई समझदार मुल्क अपनी संख्या नहीं बढ़ा रहा है।**

९ अधिक बच्चे अर्थात् दुख को, दरिद्रता को, दीनता को आमंत्रण

संख्या न बढ़ने के पीछे कई कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि **यदि जीवन में सुख चाहिये तो न्यूनतम लोग होने चाहिये।** अगर दीनता चाहिए, दुख चाहिए, गरीबी चाहिए, बीमारी चाहिए, पागलपन चाहिए तो अधिकतम

लोग पैदा करना उचित है। जब एक बाप अपने पांचवे और छठवें बच्चे के बाद भी बच्चे पैदा कर रहा है तो वह बच्चे का बाप नहीं, दुश्मन है। क्योंकि, वह उसे ऐसी दुनिया में धक्का दे रहा है, जहां वह सिर्फ गरीबी ही बांट सकेगा। वह बेटे के प्रति प्रेम जाहिर नहीं कर रहा है। बेटे के प्रति प्रेम जाहिर हो, तो वह सोचेगा कि इस बेटे को मिल क्या सकता है? इसको पैदा करना अब प्रेम नहीं, सिर्फ नासमझी है और दुश्मनी है।

आप दुनिया के समझदार मां-बाप हो सकते हैं, इस बात को सोचकर कि आप कितने बच्चे पैदा करेंगे। आने वाली दुनिया में संख्या दुश्मन हो सकती है। कभी संख्या उसकी मित्र थी, कभी संख्या बढ़ने से सुख बढ़ता था, आज संख्या बढ़ने से दुख बढ़ता है। स्थिति बिलकुल बदल गयी है। आज जिन लोगों को भी इस जगत् में सुख की, मंगल की कामना है, उन्हें यह फिक्र करनी ही पड़ेगी कि संख्या निरंतर कम होती चली जाय। हम अपने को अभागा बना सकते हैं, हमें उसका कोई भी बोध नहीं, हमें उसका कोई भी ख्याल नहीं। १९४७ में हिन्दुस्तान पाकिस्तान का बंटवारा हुआ था, तब किसी ने सोचा भी न होगा कि बीस साल में पाकिस्तान में जितने लोग गये थे, हम उससे ज्यादा लोग पैदा कर लेंगे। हमने एक पाकिस्तान फिर पैदा कर लिया। १९४७ में जितनी संख्या पूरे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को मिलाकर थी, आज अकेले हिन्दुस्तान की उससे ज्यादा है। यह संख्या इतने अनुपात से बढ़ती चली जा रही है और फिर **दुख बढ़ रहा है, दरिद्रता बढ़ रही है, दीनता बढ़ रही है, बेकारी बढ़ रही है तो हम परेशान होते हैं।** उससे डरते हैं और हम कहते हैं कि बेकारी नहीं चाहिए, बीमारी नहीं चाहिए, हर आदमी को जीवन की सारी सुविधाएँ मिलनी चाहिए। और हम यह भी नहीं सोचते हैं कि जो हम कर रहे हैं, उससे हर आदमी को जीवन की सारी सुविधाएँ कभी भी नहीं मिल सकतीं। हमारे बेटे बेकार ही रहेंगे। भिखमंगी और गरीबी बढ़ेगी। लेकिन, हमारे धर्म-गुरु समझाते हैं कि यह ईश्वर का विरोध है, संतति नियमन की बात ईश्वर का विरोध है।

१० जन्म-निरोध का धर्म-गुरुओं द्वारा विरोध—अज्ञानपूर्ण, स्वार्थपूर्ण

तो क्या इसका यह मतलब नहीं हुआ कि ईश्वर चाहता है कि लोग दीन रहें, भीख माँगें, गरीब हों, भूखों मरें, सड़कों पर नंगे घूमें। अगर ईश्वर यही चाहता

है, तो ऐसे ईश्वर की चाह को भी इंकार करना पड़ेगा। लेकिन, ईश्वर ऐसा कैसे चाह सकता है! हाँ, धर्म-गुरु जरूर चाह सकते हैं; क्योंकि मजे की बात यह है कि **दुनिया में जितना दुख बढ़ता है, धर्म-गुरुओं की दूकानें उतनी ही ठीक से चलती हैं।** दुनिया में सुखों की दूकानें नहीं हैं। धर्म की दूकानें दुनिया के दुख पर निर्भर हैं। सुखी और आनन्दित आदमी धर्म-गुरु की तरफ नहीं जाता। स्वस्थ और प्रसन्न आदमी धर्म-गुरु की तरफ नहीं जाता। दुखी, बीमार और परेशान व्यक्ति धर्म-गुरु की तलाश करता है। हाँ, सुखी और आनन्दित आदमी धर्म की खोज कर सकता है, लेकिन धर्म-गुरु की नहीं। सुखी और आनंदित आदमी अपनी तरफ से सीधे परमात्मा की खोज पर जा सकता है, लेकिन किसी का सहारा मांगने नहीं जा सकता। दुखी और परेशान आदमी आत्म-विश्वास खो देता है। वह किसी का सहारा चाहता है। किसी धर्म-गुरु के चरण चाहता है। किसी का हाथ चाहता है और किसी का मार्ग-दर्शन चाहता है। दुनिया में जब तक दुख है, तभी तक धर्म-गुरु टिक सकता है। धर्म तो टिकेगा सुखी हो जाने के बाद भी, लेकिन धर्म-गुरु के टिकने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए, धर्म-गुरु चाहेगा कि दुख खत्म न हो जायें, दुख समाप्त न हो जायें। उनके अजीब-अजीब धंधे हैं।

मैंने सुना है—एक रात एक होटल में बहुत देर तक कुछ मित्र आकर शराब पीते रहे, भोजन करते रहे। आधी रात जब वे बिदा होने लगे तो मैनेजर ने अपनी पत्नी से कहा कि ऐसे भले प्यारे, दिल-फेंक खर्च करने वाले लोग अगर रोज आयें तो हमारी जिन्दगी में आनन्द ही आनन्द हो जाय। चलते वक्त मैनेजर ने उनसे कहा, "आप जब कभी आया करें। बड़ी कृपा होगी। आप आये, हम बड़े आनन्दित हुए।" जिस आदमी ने पैसे चुकाये थे, उसने कहा, "भगवान् से प्रार्थना करना कि हमारा धंधा ठीक चले, हम रोज आते रहेंगे।" मैनेजर ने पूछा—"लेकिन, आपका धंधा क्या है?" उसने कहा—"यह मत पूछो, तुम तो सिर्फ प्रार्थना करना कि हमारा धंधा ठीक से चलता रहे।" फिर भी उसने कहा—कृपाकर बता तो दें कि आपका धंधा क्या है? उसने कहा कि मैं मरघट में लकड़ी बेचने का काम करता हूँ। हमारा धंधा रोज चलता रहे, तो हम बराबर आते रहेंगे। कभी-कभी ऐसा होता है कि धंधा बिलकुल नहीं चलता। कोई गांव में मरता ही नहीं, लकड़ी बिलकुल नहीं बिकती। जिस दिन गांव में ज्यादा लोग मरते हैं, उस दिन लकड़ी ज्यादा बिकती है और हम लोग चले आते हैं।

आपने सुना होगा डॉक्टर लोग भी कुछ ऐसा ही कहते हैं, जब मरीज ज्यादा होते हैं, तो कहते हैं, 'सीजन (काम का मौसम) अच्छा चल रहा है। आश्चर्य

की बात है। अगर किन्हीं लोगों का धंधा लोगों के बीमार होने से चलता हो, तो फिर बीमारी मिटाना बहुत मुश्किल हो जायेगी। अभी डॉक्टरों को हमने उल्टा काम सौंपा हुआ है कि वह लोगों की बीमारी मिटाये। अतः उनकी भीतरी आकांक्षा यह है कि लोग ज्यादा बीमार हों, क्योंकि उनका व्यवसाय बीमारी पर खड़ा है। इसलिए रूस ने क्रांति के बाद जो काम किये, उनमें एक काम यह था कि उन्होंने डॉक्टर के काम को नेशनलाइज (राष्ट्रीयकरण) कर दिया। उन्होंने कहा कि डॉक्टर का काम व्यक्तिगत निर्धारित करना खतरनाक है, क्योंकि वह ऊपर से बीमार को ठीक करना चाहेगा और भीतरी आकांक्षा करेगा कि 'बीमार' बीमार ही बना रहे। कारण, उसका धंधा तो किसी के बीमार रहने से ही चलेगा। इसलिए, उन्होंने डॉक्टर का धंधा, प्राइवेट प्रेक्टिस बिलकुल बंद कर दी। वहां डॉक्टर को वेतन मिलता है। बल्कि, उन्होंने एक नया प्रयोग भी किया है। हर डॉक्टर को एक क्षेत्र दिया जाता है, उसमें यदि ज्यादा लोग बीमार होते हैं तो उससे 'एक्सप्लेनेशन' मांगा जाता है—'इस क्षेत्र में ज्यादा लोग बीमार कैसे हुए?' वहां डॉक्टर को यह चिंता करनी पड़ती है कि कोई बीमार न पड़े। चीन में माओ ने आते ही वकील के धंधे को नेशनलाइज कर दिया, क्योंकि वकील का धंधा खतरनाक है। क्योंकि वकील का धंधा कान्ट्रेडिक्टरी है। है तो वह इसलिए कि न्याय उपलब्ध कराये और उसकी सारी चेष्टा यह रहती है कि उपद्रव हों, चोरियाँ हों, हत्याएँ हों, क्योंकि उसका धंधा इसी पर निर्भर करता है।

धर्म-गुरु का धंधा भी बड़ा विरोधी है। वह चेष्टा तो यह करता है कि लोग शांत हों, आनन्दित हों, सुखी हों, लेकिन उसका धंधा इस पर निर्भर करता है कि लोग अशांत रहें, दुखी रहें, बेचैन और परेशान रहें। कारण, अशांत लोग ही उसके पास यह जानने आते हैं कि हम शांत कैसे रहें। दुखी लोग उसके पास आते हैं कि हमारा दुख कैसे मिटे? दीन-दरिद्र उसके पास आते हैं कि हमारी दीनता का अंत कैसे हो। धर्म-गुरु का धंधा लोगों के बढ़ते हुए दुख पर निर्भर है। इसलिए, जब भी दुनिया में दुख बढ़ जाता है तब धर्म-गुरु एकदम प्रभावी हो जाते हैं। अनैतिकता बढ़ जाय तो धर्म-गुरु एकदम प्रभावी हो जाता है, क्योंकि वह नीति का उपदेश देने लगता है। धर्म-गुरु सारी बातें ईश्वर पर थोप देता है।

अब सारी दुनिया के धर्म-गुरुओं ने सब बातें ईश्वर पर थोप दी हैं, और ईश्वर कभी गवाही देने आता नहीं कि उसकी मर्जी क्या है? वह क्या चाहता है? उसकी क्या इच्छा है? इंग्लैण्ड और जर्मनी में अगर युद्ध हो, तो इंग्लैण्ड का धर्म-गुरु समझाता है कि ईश्वर की इच्छा है कि इंग्लैण्ड जीते, और जर्मनी का धर्म-

गुरु समझाता है कि ईश्वर की इच्छा है जर्मनी को जिताना। जर्मनी में उसी भगवान् से प्रार्थना की जाती है कि अपने देश को जिताओ और इंग्लैण्ड में भी पादरी और पुरोहित प्रार्थना करता है कि हे भगवान्, अपने देश को जिताओ। ईश्वर की इच्छा पर हम अपनी इच्छा थोपते रहते हैं। ईश्वर बेचारा बिलकुल चुप है। कुछ पता नहीं चलता कि उसकी इच्छा क्या है? अच्छा हो कि हम ईश्वर पर अपनी इच्छाएँ न थोपें। हम इस जीवन को सोचें, समझें और वैज्ञानिक रास्ता निकालें।

११ दुष्चक्र—गरीबी, अधिक बच्चे और अधिक गरीबी का

यह भी ध्यान में रखने योग्य है कि जो समाज जितना समृद्ध होता है, वह उतने ही कम बच्चे पैदा करता है। लेकिन दुखी, दीन, दरिद्र लोग जीवन में किसी अन्य मनोरंजन और सुख की सुविधा न होने से सिर्फ सेक्स (यौन) में ही सुख लेने लगते हैं, उनके पास और कोई उपाय नहीं रहता। एक अमीर संगीत भी सुनता है, साहित्य भी पढ़ता है, चित्र भी देखता है, घूमने भी जाता है, पहाड़ की यात्रा भी करता है। उसकी शक्ति बहुत दिशाओं में बह जाती है। एक गरीब आदमी के पास शक्ति बहाने का और कोई उपाय नहीं रहता, उसके मनोरंजन का कोई और उपाय नहीं रहता, क्योंकि सब मनोरंजन खर्चीले हैं, सिर्फ सेक्स ही ऐसा मनोरंजन है, जो मुफ्त उपलब्ध है। इसलिये गरीब आदमी बच्चे इकट्ठे करता चला जाता है। गरीब आदमी इतने अधिक बच्चे इकट्ठे कर लेता है कि गरीबी बढ़ती चली जाती है। गरीब आदमी ज्यादा बच्चे पैदा करता है। गरीब के बच्चे और गरीब होते हैं, वे और बच्चे पैदा करते जाते हैं, और देश और गरीब होता चला जाता है। किसी न किसी तरह गरीब आदमी की इस भ्रामक स्थिति को तोड़ना जरूरी है। इसे तोड़ना ही पड़ेगा, अन्यथा गरीबी का कोई पारावारा नहीं रहेगा, गरीबी इतनी बढ़ जायेगी कि जीना असम्भव हो जायगा। इस देश में तो गरीबी बढ़ ही गई है, जीना करीब-करीब असम्भव हो गया है। कोई मान ही नहीं सकता कि हम जी रहे हैं। अच्छा हो कि कहा जाय कि हम धीरे-धीरे मर रहे हैं।

१२ गरीबी में जीना जीवन नहीं है

जीने का क्या अर्थ?—जीने का इतना ही अर्थ है कि 'एग्जिस्ट' करते हैं (हमारा अस्तित्व है)—हम दो रोटी खा लेते हैं, पानी पी लेते हैं और कल तक के

लिए जी जाते हैं, लेकिन जीना ठीक अर्थों में तभी उपलब्ध होता है, जब हम 'एफ्ल्युएन्स' को, समृद्धि को उपलब्ध हों। जीवन का अर्थ है 'ओवर फ्लोइंग', जीने का अर्थ है, [कोई चीज हमारे ऊपर से बहने लगे। एक फूल है, आपने कभी ख्याल किया है कि फूल कैसे खिलता है पौधे पर ? अगर पौधे को खाद न मिले, ठीक पानी न मिले, तो पौधा जिंदा रहेगा, लेकिन फूल नहीं खिलेगा। फूल 'ओवर फ्लोइंग' है। जब पौधे में इतनी शक्ति इकट्ठी हो जाती है कि अब पत्तों को, शाखाओं को, जड़ों को कोई आवश्यकता नहीं रह जाती, जब पौधे के पास कुछ अतिरिक्त इकठ्ठा हो जाता है, तब फूल खिलता है। फूल जो है वह अतिरिक्त है, इसलिए फूल सुन्दर है, वह अतिरेक है। वह किसी चीज का बहुत हो जाने से बहाव है। जीवन में सभी सौंदर्य अतिरेक हैं। सभी सौन्दर्य 'ओवर फ्लोइंग' हैं, ऊपर से बह जाना है। जीवन के सब आनन्द भी अतिरेक हैं। **जीवन में जो भी श्रेष्ठ हैं, वह सब ऊपर से बहा हुआ है।** महावीर और बुद्ध राजाओं के बेटे हैं, कृष्ण और राम भी राजाओं के बेटे है। ये 'ओवर फ्लोइंग' हैं। ये फूल जो खिले हैं, गरीब के घर में नहीं खिल सकते थे। कोई महावीर गरीब के घर में पैदा नहीं होगा, कोई बुद्ध भी गरीब के घर में पैदा नहीं होगा। कोई राम और कोई कृष्ण भी नहीं। **गरीब के घर में ये फूल नहीं खिल सकते। गरीब सिर्फ जी सकता है, उसका जीना इतना न्यूनतम है कि उससे फूल खिलने का कोई उपाय ही नहीं।** गरीब पौधा है, वह किसी तरह जी लेता है, किसी तरह उसके पत्ते भी हो जाते हैं, किसी तरह शाखाएँ भी निकल जाती हैं, लेकिन न तो वह पूरी ऊंचाई ग्रहण कर पाता है, न वह सूरज को छू पाता है, न आकाश की तरफ उठ पाता है, न उसमें फूल खिल पाते हैं, क्योंकि फूल तो तभी खिल सकते हैं, जब पौधे के पास जीने से अतिरिक्त शक्ति इकठ्ठी हो जाय। जीने से अतिरिक्त जब इकट्ठा होता है, तभी फूल खिलते हैं। ताजमहल भी वैसा ही फूल है। वह अतिरेक से निकला हुआ फूल है।

जगत् में जो भी सुन्दर है, साहित्य है, काव्य है, वे सब अतिरेक से निकले हुए फूल हैं। गरीब की जिन्दगी में फूल कैसे खिल सकते हैं ? लेकिन, हम रोज अपने को गरीब करने का उपाय करते चले जाते हैं। लेकिन ध्यान रहे, जीवन में जो सबसे बड़ा फूल है परमात्मा का, वह संगीत, साहित्य, काव्य, चित्र और जीवन के छोटे-छोटे आनन्द से भी ज्यादा शक्ति जब ऊपर इकट्ठी होती है, तब वह परम फूल खिलाता है—परमात्मा का। लेकिन, गरीब समाज उस फूल के लिए कैसे उपयुक्त बन सकता है !

गरीब समाज रोज दीन होता जाता है, रोज हीन होता चला जाता है। गरीब बाप जब दो बेटे पैदा करता है, तो अपने से दुगने गरीब पैदा करता जाता

है। जब वह अपने चार बेटों में सम्पत्ति का विभाजन करता है तो उसकी सम्पत्ति नहीं बँटती। सम्पत्ति तो है ही नहीं, बाप ही गरीब था, बाप के पास ही कुछ न था, **बाप सिर्फ अपनी गरीबी बाँट देता है और चौगुने गरीब समाज में अपने बच्चों को खड़ा कर जाता है।** हिन्दुस्तान सैकड़ों सालों से अमीरी नहीं, सिर्फ गरीबी बांट रहा है।

१३ गरीब समाज के लिये ब्रह्मचर्य का उपदेश व्यर्थ

हाँ, धर्म-गुरु सिखाते हैं—ब्रह्मचर्य। वे कहते हैं कि कम बच्चे पैदा करना हो तो ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। किंतु, गरीब आदमी के लिए मनोरंजन के सब साधन बन्द हैं। और धर्म-गुरु कहते हैं कि वह ब्रह्मचर्य धारण करे। अर्थात् जीवन में जो कुछ मनोरंजन का साधन उपलब्ध है, उसे भी ब्रह्मचर्य से बन्द कर दे। तब तो गरीब आदमी मर ही गया। वह चित्र देखने जाता है तो रुपया खर्च होता है, किताब पढ़ने जाता है तो रुपया खर्च होता है, संगीत सुनने जाता है तो रुपया खर्च होता है। एक सस्ता और सुलभ साधन था, धर्म-गुरु कहता है कि ब्रह्मचर्य से उसे भी बन्द कर दे। इसीलिए धर्म-गुरु की ब्रह्मचर्य की बात कोई नहीं सुनता, खुद धर्म-गुरु ही नहीं सुनते अपनी बात। यह बकवास बहुत दिनों चल चुकी, उसका कोई लाभ नहीं हुआ। उससे कोई हित भी नहीं हुआ। विज्ञान ने ब्रह्मचर्य की जगह एक नया उपाय दिया, जो सर्वसुलभ हो सकता है। वह है—संतति नियमन के कृत्रिम साधन, जिससे व्यक्ति को ब्रम्हचर्य में बंधने की कोई जरूरत नहीं। जीवन के द्वार खुले रह सकते हैं, अपने को 'सप्रेस' (दमित) करने की कोई भी जरूरत नहीं। और यह भी ध्यान रहे कि जो व्यक्ति एक बार अपनी यौन प्रवृत्ति को जोर से दबा देता है, वह व्यक्ति सदा के लिए किन्हीं अर्थों में रुग्ण हो जाता है। यौन की वृत्ति से मुक्त हुआ जा सकता है, लेकिन यौन की वृत्ति को दबा कर कोई कभी मुक्त नहीं हो सकता। यौन की वृत्ति से मुक्त हुआ जा सकता है, अगर यौन में निकलने वाली शक्ति किसी और आयाम में, किसी और दिशा में प्रवाहित हो जाय, तो मुक्त हुआ जा सकता है।

एक वैज्ञानिक मुक्त हो जाता है बिना किसी ब्रह्मचर्य के, बिना राम-राम का पाठ किये, बिना हनुमान चालीसा पढ़े। एक वैज्ञानिक मुक्त हो जाता है, क्योंकि उसकी सारी शक्ति, सारी ऊर्जा विज्ञान की खोज में लग जाती है। एक चित्रकार भी मुक्त हो सकता है, एक संगीतज्ञ भी मुक्त हो सकता है, एक परमात्मा का खोजी भी मुक्त हो सकता है। ध्यान रहे, लोग कहते हैं ब्रह्मचर्य जरूरी है, परमात्मा

की खोज के लिए। मैं कहता हूँ, यह बात गलत है। हाँ, परमात्मा की खोज पर जानेवाला ब्रह्मचर्य को उपलब्ध हो जाता है। अगर कोई परमात्मा की खोज में पूरी तरह चला जाय, तो उसकी सारी शक्तियाँ इतनी लीन हो जाती हैं कि उसके पास यौन की दिशा में जाने के लिए न शक्ति का बहाव बचता है और न ही आकांक्षा। **ब्रह्मचर्य से कोई परमात्मा की तरफ नहीं जाता, लेकिन परमात्मा की तरफ जाने वाला ब्रह्मचर्य को उपलब्ध हो जाता है**। लेकिन, अगर हम किसी से कहें कि वह बच्चे रोकने के लिए ब्रह्मचर्य का उपयोग करे, तो यह अव्यावहारिक है।

गांधीजी निरंतर यही कहते रहे, इस मुल्क के और भी महात्मा यही कहते हैं कि ब्रह्मचर्य का उपयोग करो। लेकिन, गांधीजी जैसे महान् आदमी भी ठीक-ठीक अर्थों में ब्रह्मचर्य को कभी उपलब्ध नहीं हुए। वे भी कहते हैं कि मेरे स्वप्न में कामवासना उतर आती है। वे भी कहते हैं कि दिन में तो मैं संयम रख पाता हूँ, पर स्वप्नों में सब संयम टूट जाता है, और जीवन के अंतिम दिनों में एक स्त्री को बिस्तर पर लेकर सोकर वे प्रयोग करते थे कि अभी भी कहीं कामवासना शेष तो नहीं रह गयी? सत्तर साल की उम्र में एक युवती को रात में बिस्तर पर लेकर सोते थे, यह जानने के लिए कि कहीं काम-वासना शेष तो नहीं रह गयी है। पता नहीं, क्या परिणाम हुआ! वे क्या जान पाये! लेकिन, एक बात पक्की है कि उन्हें सत्तर वर्ष की उम्र तक शक रहा होगा कि ब्रह्मचर्य उपलब्ध नहीं हुआ अन्यथा इस परीक्षा की कोई जरूरत न थी।

१४ ब्रह्मचर्य की बात अवैज्ञानिक व अव्यावहारिक—जन्म-निरोधक कृत्रिम साधनों का उपयोग जरूरी

ब्रह्मचर्य की बात एकदम अवैज्ञानिक और अव्यावहारिक है। कृत्रिम साधनों का उपयोग किया जा सकता है और मनुष्य के चित्त पर बिना कोई दबाव दिये उनका उपयोग किया जा सकता है।

कुछ प्रश्न उठाये जाते हैं। यहां उनके उत्तर देना पसंद करूँगा। एक मित्र ने पूछा है कि अगर यह बात समझायी जाय तो जो समझदार हैं, बुद्धिजीवी हैं, 'इंटेलिजेन्सिया' है, मुल्क का जो अभिजात वर्ग है, बुद्धिमान और समझदार है, वह तो मान जायगा, वह तो संतति नियमन कर लेगा, परिवार नियोजन कर लेगा। लेकिन, जो गरीब हैं, दीन-हीन हैं, बे-पढ़े लिखे ग्रामीण हैं, जो कुछ समझते ही नहीं, वे बच्चे पैदा करते ही चले जायेंगे और **लम्बे अरसे में परिणाम यह होगा कि बुद्धिमानों के बच्चे कम हो जायेंगे और**

बुद्धिहीनों के बच्चों की संख्या बढ़ती जायगी। इसे दूसरी तरह से धर्म-गुरु भी उठाते हैं, वे कहते हैं कि—मुसलमान तो सुनते नहीं, ईसाई सुनते नहीं, केथोलिक सुनते नहीं, वे कहते हैं कि 'संतति नियमन' हमारे धर्म के विरोध में हैं। मुसलमान फिक्र नहीं करता तो हिन्दू क्यों फिक्र करेगा? हिन्दू धर्म—गुरू कहते हैं कि हिन्दू सिकुड़ते और मुसलमान ईसाई बढ़ते चले जायेंगे। पचास साल में मुश्किल हो जायेगी, हिन्दू नगण्य हो जायेंगे, मुसलमान और ईसाई बढ़ जायेंगे। इस बात में भी थोड़ा अर्थ है।

१५ संतति नियमन ऐच्छिक नहीं, अनिवार्य हो

इन दोनों के सम्बंध में कुछ कहना चाहूँगा। पहली बात तो यह है कि **संतति नियमन 'कम्पलसरी' (अनिवार्य) होना चाहिये, 'वालेन्टरी' (ऐच्छिक) नहीं।** जब तक हम एक-एक आदमी को समझाने की कोशिश करेंगे कि तुम्हें संतति नियमन करवाना चाहिए, तब तक इतनी भीड़ हो चुकी होगी कि संतति नियमन का कोई अर्थ नहीं रह जायगा। एक अमेरिकी विचारक ने लिखा है कि इस वक्त सारी दुनिया में जितने डॉक्टर परिवार नियोजन में सहयोगी हो सकते हैं, अगर वे सब के सब एशिया में लगा दिये जायँ, और वे बिलकुल न सोयें, चौबीसों घंटे आपरेशन करते रहें, तो भी उन्हें एशिया को उस स्थिति में लाने के लिये, जहां जनसंख्या नियंत्रण में आ जाय, पांच सौ वर्ष लगेंगे। और पांच सौ वर्ष में तो हमने इतने नये बच्चे पैदा कर लिये होंगे, जिसका कोई हिसाब नहीं रह जायगा।

ये दोनों सम्भावनाएँ नहीं हैं——दुनिया के सभी डॉक्टर एशिया में लाकर लगाये नहीं जा सकते और पांच सौ वर्षों में हम खाली थोड़े ही बैठे रहेंगे। पांच सौ वर्षों में तो हम न जाने क्या कर डालेंगे? नहीं, यह सम्भव मालूम नहीं होता। **समझने-बुझाने के प्रयोग से तो सफलता दिखाई नहीं पड़ती। संतति नियमन तो अनिवार्य करना पड़ेगा और यह अ-लोक-तांत्रिक नहीं है।** एक आदमी की हत्या करने में जितना नुकसान होता है, उससे हजार गुना नुकसान एक बच्चे को पैदा करने से होता है। आत्महत्या से जितना नुकसान होता है, एक बच्चा पैदा करने से उससे हजार गुना नुकसान होता है।

१६ हिन्दू और मुसलमान के लिए विवाह कानून अलग-अलग न हो

संतति नियमन अनिवार्य होना चाहिये। तब गरीब व अमीर और बुद्धिमान व गैर-बुद्धिमान का सवाल नहीं रह जायगा। तब हिंदू, मुसलमान

और ईसाई का सवाल नहीं रह जायगा। यह देश बड़ा अजीब है। हम कहते हैं कि हम धर्म-निरपेक्ष हैं, और फिर भी सब चीजों में धर्म का विचार करते हैं। सरकार भी विचार रखती है। 'हिंदू कोड बिल' बना हुआ है, वह सिर्फ हिंदू स्त्रियों पर ही लागू होता है। यह बड़ी अजीब बात है। **सरकार जब धर्म-निरपेक्ष है तो मुसलमान स्त्रियों को अलग करके सोचे, यह बात ही गलत है।** सरकार को सोचना चाहिए स्त्रियों के संबंध में। मुसलमान को हक है कि वह चार शादियाँ करे, किन्तु हिन्दू को हक नहीं। तो मानना क्या होगा ? यह धर्म-निरपेक्ष राज्य कैसे हुआ ? **हिंदुओं के लिये अलग नियम और मुसलमान के लिये अलग नियम नहीं होना चाहिये,** सरकार को सोचना चाहिए 'स्त्री' के लिये। क्या यह उचित है कि चार स्त्रियाँ एक आदमी की पत्नी बनें ? वह हिन्दू हो या मुसलमान, यह असंगत है। चार स्त्रियाँ एक आदमी की पत्नियाँ बनें, यह बात ही असमानवीय है। यह सवाल नहीं है कि कौन हिंदू है। कौन मुसलमान है ? ये अपनी-अपनी इच्छा की बात है। फिर, कल हम यह भी कह सकते हैं कि मुसलमान को हत्या करने की थोड़ी सुविधा देनी चाहिए, ईसाई को थोड़ी या हिंदू को थोड़ी सुविधा देनी चाहिए हत्या करने की। नहीं, हमें व्यक्ति और आदमी की दृष्टि से विचार करने की जरूरत नहीं है। यह सवाल पूरे मुल्क का है, इसमें हिंदू, मुसलमान और ईसाई अलग नहीं किये जा सकते।

१७ प्रतिभाहीन और रुग्ण बच्चों के जन्म पर सख्त रोक हो

दूसरी बात विचारणीय है कि हमारे देश में हमारी प्रतिभा निरंतर क्षीण होती चली गयी है और अगर हम आगे भी ऐसे ही बच्चे पैदा करना जारी रखते हैं, तो सम्भावना है कि हम सारे जगत् में प्रतिभा में धीरे-धीरे पिछड़ते चले जायेंगे। अगर इस जाति को ऊँचा उठाना हो—स्वास्थ्य में, सौन्दर्य में, चिन्तना में, प्रतिभा में, मेधा में, तो **हमें प्रत्येक आदमी को बच्चे पैदा करने का हक नहीं देना चाहिये।** संतति नियमन अनिवार्य तो होना ही चाहिये। बल्कि **जब तक विशेषज्ञ आज्ञा न दें, तब तक बच्चा पैदा करने का हक किसी को भी नहीं रह जाना चाहिये।** मेडिकल बोर्ड जब तक अनुमति न दे दे, तब तक कोई आदमी बच्चे पैदा न कर सके।

कितने कोढ़ी बच्चे पैदा किये जाते हैं, कितने 'ईडियट' (मूर्ख) पैदा किये जाते हैं। कितने संक्रामक रोगों से भरे लोग बच्चे पैदा करते हैं और उनके

बच्चे पैदा होते चले जाते हैं, और देश में दया और धर्म करने वाले लोग हैं। अगर वे खुद अपने बच्चे न पाल सकते हों, तो हम उनके लिए अनाथालय खोलकर उनके बच्चों को पालने का भी इंतजाम कर देते हैं। ये ऊपर से तो दान और दया दिखाई पड़ रही है, लेकिन है बड़ी खतरनाक। **इंतजाम तो यह होना चाहिये कि बच्चे स्वस्थ, सुन्दर, बुद्धिमान, प्रतिभाशाली व संक्रामक रोगों से मुक्त हों।**

असल में शादी के पहले ही हर गाँव में, हर नगर में डॉक्टरों की, विचारशील मनोवैज्ञानिकों (साइकोलॉजिस्ट्स) की सलाहकार समिति होनी चाहिए, जो प्रत्येक व्यक्ति को निर्देश दे। अगर दो व्यक्ति शादी करते हैं, तो वे बच्चे पैदा कर सकेंगे या नहीं, यह बता दें। शादी करने का हक प्रत्येक को है, ऐसे दो लोग भी शादी कर सकेंगे, जिनको सलाह न दी गयी हो, लेकिन बच्चे पैदा न कर सकेंगे। हम जानते हैं कि पौधे पर 'क्रास ब्रीडिंग' से कितना लाभ उठाया जा सकता है। एक माली अच्छी तरह जानता है कि नये बीज कैसे विकसित किये जाते हैं। गलत बीजों को कैसे हटाया जा सकता है। छोटे बीज कैसे अलग किये जा सकते हैं, बड़े बीज कैसे बचाये जा सकते हैं। एक माली सभी बीज नहीं बो देता, बीजों को छांटता है।

१८ जन्म-दर कम करने से प्रतिभा में विकास की अधिक संभावना

हम अब तक मनुष्य-जाति के साथ उतनी समझदारी नहीं कर सके, जो एक साधारण-सा माली बगीचे में करता है। यह भी आपको ख्याल हो कि जब माली को बड़ा फूल पैदा करना होता है तो वह छोटे फूलों को पहले ही काट देता है। आपने कभी फूलों की प्रदर्शनी देखी है, जो फूल जीतते है, उनके जीतने का कारण क्या है ? उनका कारण यह है कि माली ने होशियारी से एक पौधे पर एक ही फूल पैदा किया, बाकी फूल पैदा ही नहीं होने दिये। बाकी फूलों को उसने जड़ से ही अलग कर दिया, पौधे की सारी शक्ति एक ही फूल में प्रवेश कर गयी। एक आदमी बारह बच्चे पैदा करता है तो कभी भी बहुत प्रतिभाशाली बच्चे पैदा नहीं कर सकता। अगर एक ही बच्चा पैदा करे तो बारह बच्चों की सारी प्रतिभा एक बच्चे में प्रवेश कर सकती है।

प्रकृति के भी बड़े अद्भुत नियम हैं। प्रकृति बड़े अजीब ढंग से काम करती है, जब युद्ध होता है दुनिया में, तो **युद्ध के बाद लोगों की संतति पैदा करने की क्षमता बढ़ जाती है।** यह बड़ी हैरानी की बात है। युद्ध से क्या लेना-देना ! जब-

जब भी युद्ध होता है तो जन्म-दर बढ़ जाती है। पहले महायुद्ध के बाद जन्म-दर एकदम ऊपर उठ गयी, क्योंकि पहले महायुद्ध में कोई साढ़े तीन करोड़ लोग मर गये थे। प्रकृति कैसे इंतजाम रखती है, यह भी हैरानी की बात है। प्रकृति को कैसे पता चला कि युद्ध हो गया, और अब बच्चों का जन्म-दर बढ़ जाना चाहिए। दूसरे महायुद्ध में भी कोई साढ़े सात करोड़ लोग मरे और जन्म-दर एकदम बढ़ गयी। महामारी के बाद, हैजे के बाद, प्लेग के बाद लोगों की जन्म-दर बढ़ जाती है। अगर एक आदमी पचास बच्चे पैदा करे तो उसकी शक्ति पचास पर बिखर जाती है। अगर वह एक ही बच्चे पर केन्द्रित करे तो उसकी शक्ति, उसकी प्रतिभा प्रकृति एक ही बच्चे में डाल सकती है। १०० लड़कियाँ पैदा होती हैं, तो ११६ लड़के पैदा होते हैं। यह अनुपात है सारी दुनिया में, और यह बड़े मजे की बात है कि ११६ लड़के किसलिये पैदा होते हैं? १६ लड़के बेकार रह जायेंगे, इन्हें कौन लड़की देगा? १०० लड़कियाँ पैदा होती हैं, ११६ लड़के पैदा होते हैं। लेकिन, प्रकृति का इंतजाम बहुत ही अद्‌भुत है। प्रकृति का इंतजाम बहुत गहरा है। वह लड़कियों को कम पैदा करती है और लड़कों को अधिक; क्योंकि उम्र पाते-पाते, प्रौढ़ होते-होते १६ लड़के मर जाते हैं और संख्या बराबर हो जाती है। असल में लड़कियों की जिंदगी में जीने का रेजिस्टेन्स (अवरोध–क्षमता) लड़कों से ज्यादा है, इसलिए १६ लड़के ज्यादा पैदा होते हैं। हर १४ साल के बाद संख्या बराबर हो जाती है। लड़कियों में जिंदा रहने की शक्ति लड़कों से ज्यादा है।

आमतौर से पुरुष सोचता है कि हम सब तरह से शक्तिवान हैं। इस भूल में मत पड़ना, कुछ बातों को छोड़कर स्त्रियां पुरुषों से कई अर्थों में ज्यादा शक्तिवान हैं, उनका रेजिस्टेन्स, उनकी शक्ति कई अर्थों में ज्यादा है। शायद प्रकृति ने स्त्री को सारी क्षमता इसलिए दी है कि वह बच्चे को पैदा करने की, बच्चे को झेलने की, बड़ा करने की जो इतनी तकलीफदेय प्रक्रिया है, उन सबको झेल सके। प्रकृति सब इंतजाम कर देती है। अगर हम बच्चे कम पैदा करेंगे तो प्रकृति जो अनेक बच्चों पर प्रतिभा देती है वह एक बच्चे पर ही डाल देगी।

१९ स्वस्थ व प्रतिभावान बच्चों के जन्म हेतु वैज्ञानिक व्यवस्था

आदमी इसलिए पिछड़ा हुआ है, क्योंकि वह दूसरी चीजों के विषय में वैज्ञानिक चिंतन कर लेता है, लेकिन, आदमियों के सम्बन्ध में नहीं करता। **आदमियों के सम्बंध में हम बड़े अवैज्ञानिक हैं।** हम कहते हैं कि हम कुंडली मिलायेंगे, हम

कहते हैं कि हम ब्राम्हण से ही शादी करेंगे। विज्ञान तो कहता है कि शादी जितनी दूर हो, उतने अच्छे बच्चे पैदा होंगे। अगर अन्तर्जातीय हो तो बहुत अच्छा, अंतर्देशीय हो तो और अच्छा, और अंतर्‌राष्ट्रीय हो तो और भी अधिक अच्छा। और आज नहीं तो कल अंतर्ग्रहीय हो जाय, मंगल पर या कहीं और आदमी मिल जाय, तो और भी अच्छा। क्योंकि, हम जानते हैं कि अंग्रेजी सॉंड और हिंदुस्तानी गाय हो, तो जो बछड़े पैदा होंगे, उसका मुकाबला नहीं रहेगा। हम आदमी के सम्बंध में समझ का उपयोग कब करेंगे? अगर हम समझ का उपयोग करेंगे, तो जो हम जानवरों के साथ कर रहे हैं, समृद्ध फूलों के साथ कर रहे हैं, वही आदमी के साथ भी करना जरूरी होगा। ज्यादा अच्छे बच्चे पैदा किये जा सकते हैं, ज्यादा स्वस्थ, ज्यादा उम्र जीने वाले, ज्यादा प्रतिभाशाली, लेकिन उनके लिए कोई व्यवस्था देने की जरूरत है।

२० संतति नियमन से यौन जीवन में क्रांति

परिवार नियोजन, मनुष्य के वैज्ञानिक संतति नियोजन का पहला कदम है। अभी और कदम उठाने पड़ेंगे, यह तो अभी सिर्फ पहला कदम है। लेकिन, पहले कदम से ही क्रांति हो जाती है, वह क्रांति आपके ख्याल में नहीं है। वह मैं आपसे कहना चाहूँगा, जो बड़ी क्रांति परिवार नियोजन की व्यवस्था से हो जाती है, 'हम पहली बार सेक्स को, यौन को संतति से तोड़ देते हैं। अब तक यौन, सम्भोग का अर्थ था––संतति का पैदा होना। अब हम दोनों को तोड़ देते हैं। अब हम कहते हैं, संतति को पैदा होने की कोई अनिवार्यता नहीं है। यौन और संतति को हम दो हिस्सों में तोड़ रहे हैं। यह बहुत बड़ी क्रांति है, इसका मतलब अंततः यह होगा कि अगर यौन से संतति के पैदा होने की सम्भावना नहीं है, तो कल हम ऐसी संतति को भी पैदा करने की व्यवस्था करेंगे जिसका हमारे यौन से कोई सम्बंध न हो––यह दूसरा कदम होगा।

संतति नियमन का अंतिम परिणाम यह होने वाला है कि हम वीर्यकणों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था कर सकेंगे। आइंस्टीन का वीर्य-कण उपलब्ध हो सकता था। एक आदमी के पास कितने वीर्यकण हैं—कभी आपने सोचा है? एक सम्भोग में एक आदमी कितने वीर्य-कण खोता है? एक सम्भोग में एक आदमी इतने वीर्य-कण खोता है कि उनसे एक करोड़ बच्चे पैदा हो सकते हैं, और एक आदमी अन्दाजन जिंदगी में चार हजार बार सम्भोग करता है। याने एक आदमी चार हजार बच्चों का बाप बन सकता है।

२१ गर्भाधान के लिए श्रेष्ठ वीर्य-कणों का चुनाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम

एक आदमी के वीर्य-कण अगर संरक्षित हो सकें तो एक आदमी चार करोड़ बच्चों का बाप बन सकता है। **एक आइंस्टीन चार हजार बच्चों को जन्म दे सकता है। एक बुद्ध चार हजार बच्चों को जन्म दे सकता है।** क्या यह उचित न होगा कि हम आदमी के बाबत विचार करें, और हम इस बात की खोज करें। संतति नियमन ने पहली घटना शुरू कर दी, हमने सेक्स को तोड़ दिया। अब हम कहते हैं कि बच्चे की फिक्र छोड़ दो, सम्भाग किया जा सकता है, सम्भोग का सुख लिया जा सकता है, बच्चे की चिन्ता की कोई जरूरत नहीं। जैसे ही यह बात स्थापित हो जायेगी, दूसरा कदम भी उठाया जा सकेगा और वह यह कि—अब जिससे सम्भोग करते हो, उससे ही बच्चा पैदा हो, तुम्हारे ही सम्भोग से बच्चा पैदा हो, यह भी अवैज्ञानिक है। और अच्छी व्यवस्था की जा सकती है, और वीर्य-कण उपलब्ध किया जा सकता है, वैज्ञानिक व्यवस्था की जा सकती है और तुम्हें वीर्य-कण मिल सकता है। चूंकि अब तक हम उसको सुरक्षित नहीं रख सकते थे, अब तो उसको सुरक्षित रखा जा सकता है। अब जरूरी नहीं कि आप जिन्दा हों तभी आपका बेटा पैदा हो। आपके मरने के ५० साल बाद भी आपका बेटा पैदा हो सकता है! इसलिए यह जल्दी करने की जरूरत नहीं है कि मेरा बेटा मेरे जिन्दा रहने में ही पैदा हो जाय, वह बाद में १० हजार साल बाद भी पैदा हो सकता है। अगर मनुष्यों ने समझा कि आपका बेटा पैदा करना जरूरी है, तो वह आपके लिए सुरक्षा कर सकता है। आपका बच्चा कभी भी पैदा हो सकता है। अब बाप और बेटे का अनिवार्य सम्बन्ध उस हालत में नहीं रह जायेगा। जिस हालत में अब तक था, वह टूट जायगा।

२२ कृत्रिम गर्भाधान से पुरानी नैतिक व्यवस्था में क्रांति

एक क्रांति हो रही है। लेकिन इस देश में हमारे पास समझ बहुत कम है। अभी तो हम संतति नियमन को ही नहीं समझ पा रहे हैं। यह पहला कदम है, यह सेक्स मॉरेलिटी (यौन-नीति) के संबंध में पहला कदम है, और **एक दफा सेक्स की पुरानी मॉरेलिटी, पुरानी नीति टूट जाय तो इतनी क्रांति होगी कि जिसका हिसाब लगाना मुश्किल है।** क्योंकि, हमें पता भी नहीं कि जो भी हमारी नीति है वह किसी पुरानी यौन व्यवस्था से संबंधित है। यौन व्यवस्था पूरी तरह टूट जाय तो पूरी नीति बदल जायगी। धर्म-गुरु इसलिए भी डरा हुआ है। गांधीजी और विनोबाजी इसलिए भी डरे हुए हैं कि अगर यह कदम उठाया गया तो यह पुरानी नैतिक व्यवस्था को तोड़ देगा, नयी नीति विकसित हो जायगी। क्योंकि, पुरानी नीति का कोई अर्थ नहीं रह जायगा।

२३ संतति-नियमन के कृत्रिम साधनों से नारी स्वतंत्रता संभव

अब तक स्त्री को निरंतर दबाया जा सकता था, पुरुष अपने सेक्स के संबंध में स्वतंत्रता बरत सकता था, क्योंकि उसको पकड़ना बहुत मुश्किल था। इसलिए, पुरुष ने ऐसी व्यवस्था बनायी थी, जिसमें स्त्री की पवित्रता और अपनी स्वतंत्रता का पूरा इन्तजाम रखा था। इसीलिये स्त्री को सती होना पड़ता था, पुरुष को नहीं। इसीलिए स्त्री के कुवांरे रहने पर भारी बल था, पुरुष के कुवांरे रहने की कोई चिंता न थी, इसीलिये अभी भी माताएँ और स्त्रियाँ कहती हैं कि लड़के तो लड़के हैं, लेकिन लड़कियों के संबंध में हिसाब अलग है। अगर संतति नियमन की बात पूरी होगी, होनी ही पड़ेगी, तो लड़कियाँ भी लड़कों जैसी मुक्त हो जायेंगी। उनको फिर बांधने और दबाने का उपाय नहीं रहेगा। लड़कियाँ उपद्रव में पड़ जा सकती थीं, क्योंकि उनको गर्भ रह जा सकता था। पुरुष उपद्रव में नहीं पड़ता था, क्योंकि उसको गर्भ का कोई डर न था। नयी व्यवस्था ने लड़कियों को भी लड़कों की स्थिति में खड़ा कर दिया है। पहली दफा स्त्री और पुरुष की समानता सिद्ध हो सकेगी। अब तक सिद्ध न हो सकती थी, चाहे हम कितना भी चिल्लाते कि स्त्रियाँ और पुरुष समान हैं। वे इसलिए समान नहीं हो सकते थे, क्योंकि पुरुष स्वतंत्रता बरत सकता था। पकड़े जाने के भय से स्त्री स्वतंत्रता नहीं बरत सकती थी। विज्ञान की व्यवस्था ने स्त्री को पुरुष के निकट खड़ा कर दिया है। अब वे दोनों बराबर स्वतंत्र हैं। **अगर पवित्रता निश्चित करनी है, तो दोनों को ही निश्चित करनी पड़ेगी,** अगर स्वतंत्रता तय करनी है, तो दोनों समान रूप से स्वतंत्र होंगे।

बर्थ-कंट्रोल, संतति नियमन के कृत्रिम साधन स्त्री को पहली बार पुरुष के निकट बिठाते हैं। बुद्ध नहीं बिठा सके, महावीर नहीं बिठा सके, अब तक दुनिया में कोई महापुरुष नहीं बिठा सके। उन्होंने कहा दोनों बराबर हैं। लेकिन वे बराबर हो नहीं सके। क्योंकि, उनकी एनाटॉमी, उनकी शरीर की व्यवस्था, खास कर गर्भ की व्यवस्था कठिनाई में डाल देती थी। **स्त्री कभी भी पुरुष की तरह स्वतंत्र**

नहीं हो सकती थी । आज पहली दफा स्त्री भी स्वतंत्र हो सकती है। अब इसके दो ही मतलब होंगे—या तो स्त्री स्वतंत्र की जाय या पुरुष की अब तक की स्वतंत्रता पर पुनर्विचार किया जाय ।

२४ संतति-नियमन और कृत्रिम गर्भाधान से पूरे जीवन-दर्शन में क्रांति

अब सारी नीति को बदलना पड़ेगा। इसलिए धर्म-गुरु परेशान हैं। अब मनु की नीति को बदलना पड़ेगा, इसलिए धर्म-गुरु परेशान हैं । अब मनु की नीति नहीं चलेगी, क्योंकि सारी व्यवस्था बदल जायेगी और इसलिए उनकी घबराहट स्वाभाविक है। लेकिन, बुद्धिमान लोगों को समझ लेना चाहिए कि उनकी घबराहट, **उनकी नीति को बचाने के लिये मनुष्यता की हत्या नहीं की जा सकती** उनकी नीति जाती हो कल, तो आज चली जाय, लेकिन **मनुष्यता को बचाना ज्यादा महत्वपूर्ण** है और ज्यादा जरूरी है। मनुष्य रहेगा तो हम नयी नीति खोज लेंगे और मनुष्यता न रही तो मनु की, याज्ञवल्क्य की किताबें सड़ जायेंगी और गल जायेंगी तथा नष्ट हो जायेंगी, उनको कोई बचा भी नहीं सकता ।

मैं परिवार नियोजन में मनुष्य के लिए भविष्य में बड़ी क्रांति की सम्भावनाएँ देखता हूँ। इतना ही नहीं कि आप दो बच्चों पर रोक लेंगे अपने को, बल्कि अगर परिवार नियोजन की स्वीकृति, उसका पूरा दर्शन हमारे ख्याल में आ जाय तो मनुष्य की पूरी नीति, पूरा धर्म, अंततः परिवार की पूरी व्यवस्था और अंतिम रूप से परिवार का पूरा ढांचा बदल जायगा । कभी छोटी चीजें सब बदल देती हैं, जिनका हमें ख्याल नहीं होता । मैं परिवार नियोजन और कृत्रिम साधनों के पक्ष में हूं, क्योंकि **मैं अंततः जीवन को चारों तरफ से क्रांति से गुजरा हुआ देखना चाहता हूं ।**

चीन से एक आदमी ने जर्मनी के एक विचारक को एक छोटी-सी पेटी भेजी। लकड़ी की पेटी—बहुत खूबसूरत खुदाव था उस पेटी पर । अपने मित्र को वह पेटी भेजी और लिखा कि मेरी एक ही शर्त है उसको ध्यान में रखना, इस पेटी का मुंह हमेशा पूर्व की तरफ रखना; क्योंकि यह पेटी हजार वर्ष पुरानी है और जिन-जिन लोगों के हाथों में गयी है, यह शर्त उनके साथ रही है कि इसका मुंह पूर्व की तरफ रहे, यह इसे बनाने वाले की इच्छा है। अब तक पूरी की गयी है, इसका ध्यान रखना। उसके मित्र ने लिख भेजा कि चाहे कुछ भी हो वह पेटी का मुंह पूर्व की तरफ रखेगा, इसमें कठिनाई क्या है? लेकिन पेटी इतनी खूबसूरत थी कि

जब उसने अपने बैठकखाने में पेटी का मुंह पूर्व की ओर करके रखा तो देखा कि पूरा बैठनाखाना—बेमेल हो गया। उसे पूरे बैठकखाने को बदलना पड़ा, फिर से आयोजित करना पड़ा, सोफे बदलने पड़े, टेबिलें बदलनी पड़ीं, फोटो बदलने पड़े। जब उसने सब बदल दिया तो उसे हैरानी हुई कि कमरे के जो दरवाजे खिड़कियां थीं, ये बे-मेल हो गईं। पर उसने पक्का आश्वासन दिया था तो उसने खिड़की दरवाजे भी बदल डाले। लेकिन वह कमरा अब पूरे मकान में बे-मेल हो गया, तो उसने पूरा मकान बदल लिया,। आश्वासन दिया था, तो उसे पूरा करना था । तब उसने पाया कि उसका बगीचा, बाहर का दृश्य, फूल सब बे-मेल हो गये, तब उसको उन सब को बदलना पड़ा। फिर भी उसने अपने मित्र को लिखा कि मेरा घर मेरी पूरी बस्ती में बे-मेल हुआ जा रहा है, इसलिए मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं, अपने घर तक को बदल सकता हूँ, लेकिन पूरे गांव को कैसे बदलूंगा और गांव को बदलूंगा तो शायद वह सारी दुनिया में बे-मेल हो जाय, तो बड़ी मुश्किल हो जायेगी ।

यह घटना बताती है कि एक छोटी-सी बदलाहट अंततः सब चीजों को बदल देती है ।

२५ यौन जीवन में क्रांति से बहु-आयामी क्रांति का सूत्रपात

धर्म-गुरु का डरना ठीक है, वह डरा हुआ है। वह डरा हुआ है—उसके कारण हैं। उसे अचेतन में यह बोध हो रहा है कि **अगर संतति नियमन और परिवार नियोजन की व्यवस्था आ गई तो अब तक की परिवार की धारणा, नीति सब बदल जायेगी ।** और मैं क्यों पक्ष में हूं? क्योंकि मैं चाहता हूं कि वह जितनी जल्दी बदले, उतना अच्छा है। आदमी ने बहुत दुख झेल लिया पुरानी व्यवस्था से, उसे नयी व्यवस्था खोजनी चाहिए, जरूरी नहीं कि नयी व्यवस्था सुख ही लायेगी, लेकिन कम-से-कम पुराना दुख तो न होगा। दुख भी होंगे तो नये होंगे। और जो नये दुख खोज सकता है, वह नये सुख भी खोज सकेगा। असल में **नये की खोज की हिम्मत जुटानी जरूरी है।** पूरे मनुष्य को नया करना है, और परिवार नियोजन और संतति नियमन केंद्रीय बन सकता है, क्योंकि सेक्स मनुष्य के जीवन में केन्द्रीय है, हम उसकी बात करें या न करें। हम उसकी चर्चा करें या न करें, सेक्स मनुष्य के जीवन में केन्द्रीय तत्व है। अगर उसमें कोई भी बदलाहट होती है तो हमारा पूरा धर्म, पूरी नीति सब बदल जायेगी। वे बदल जानी ही चाहिए ।

मनुष्य के भोजन, निवास, भविष्य की समस्याएँ ही इससे बंधी नहीं हैं, मनुष्य की आत्मा, मनुष्य की नैतिकता, मनुष्य के भविष्य का धर्म, मनुष्य के भविष्य का परमात्मा भी इस बात पर निर्भर है कि हम अपने यौन के संबंध में क्या दृष्टिकोण अख्तियार करते हैं।

● **प्रश्नकर्ता :** भगवान् श्री, परिवार नियोजन के बारे में अनेक लोग प्रश्न करते हैं कि परिवार नियोजन द्वारा अपने बच्चों की संख्या कम करना धर्म के खिलाफ है। क्योंकि, उनका कहना है कि बच्चे तो ईश्वर की देन हैं, और खिलाने वाला परमात्मा है। हम कौन हैं? हम तो सिर्फ जरिया हैं, इंस्ट्रूमेंट है। हम तो सिर्फ बीच में इंस्ट्रूमेन्ट है जिसके जरिये ईश्वर खिलाता है। देने वाला वह, करने वाला वह, कराने वाला वह, फिर हम क्यों रोक डालें? अगर हमको ईश्वर ने दस बच्चे दिये तो दसों को खिलाने का प्रबंध भी वही करेगा। इस संबंध में आपके क्या विचार हैं?

२६ मनुष्य अपने सुख व दुःख का निर्माता स्वयं है

भगवान् श्री : सबसे पहले तो "धर्म क्या है" इस प्रबंध में थोड़ी-सी बात समझ लेनी चाहिए। **धर्म है मनुष्य को अधिकतम आनंद, मंगल और सुख देने की कला।** मनुष्य कैसे अधिकतम रूप से मंगल को उपलब्ध हो इसका विज्ञान ही धर्म है। तो, धर्म ऐसी किसी बात की सलाह नहीं दे सकता जिससे मनुष्य के जीवन में सुख की कमी हो। परमात्मा भी वह नहीं चाह सकता जिससे कि मनुष्य का दुःख बढ़े, परमात्मा भी चाहेगा कि मनुष्य का आनन्द बढ़े। लेकिन, परमात्मा मनुष्य को परतंत्र भी नहीं करता, क्यों? क्योंकि, परतंत्रता भी दुःख है। इसलिए परमात्मा ने मनुष्य को पूरी तरह स्वतंत्र छोड़ा है, और स्वतंत्रता में अनिवार्य रूप से यह भी सम्मिलित है कि मनुष्य चाहे तो अपने लिए दुःख निर्माण कर ले, तो भी परमात्मा रोकेगा नहीं। हम अपना दुःख भी बना सकते हैं और सुख भी। हम आनन्दमय हो सकते है और परेशान भी। यह सारी स्वतंत्रता मनुष्य को है। इसलिये **यदि हम दुःखी होते हैं तो परमात्मा जिम्मेदार नहीं है।** उस दुःख के कारण हमें खोजने पड़ेंगे और बदलने पड़ेंगे।

मनुष्य ने दुःख के कारण बदलने में बहुत विकास किया है। एक बड़ा दुःख था जगत् में कि मृत्यु की दर बहुत ज्यादा थी। दस बच्चे पैदा होते थे तो नौ बच्चे मर जाते थे, यह इतने दुःख की घटना थी जिसका कोई हिसाब नहीं था। शायद मा-बाप के लिए इससे दुखद कोई घटना न थी। खुद का मरना भी शायद इतना

दुखद न होता जितना दस बच्चे पैदा हों और नौ बच्चे मर जायें। तो मां-बाप बच्चों के जन्म की करीब-करीब खुशी ही नहीं मना पाते, मरने का दुःख मनाते ही जिन्दगी बीत जाती थी। तो मनुष्य ने निरंतर खोज की और अब यह हालत आ गयी है कि दस बच्चों में से नौ बच्चे बच सकते हैं और कल दस बच्चे भी बचाये जा सकेंगे। दस बच्चे में से नौ बच्चे मरते थे तो एक आदमी को अगर तीन बच्चे बचाना हो तो कम-से-कम औसतन तीस बच्चे पैदा करने होते थे। जब तीस बच्चे पैदा होते थे तो तीन बच्चे बचते थे। अब मनुष्य ने खोज कर ली है नियमों की और वह इस जगह पहुंच गया कि दस बच्चों में से नौ जिन्दा रहेंगे, दस भी जिन्दा रह सकते हैं। लेकिन, आदत उसकी पुरानी पड़ी हुई है—तीस बच्चे पैदा करने की।

आज परिवार नियोजन जो कह रहा है—"दो या तीन बच्चे बस," यह कोई नयी बात नहीं है। इतने बच्चे तब भी थे। इससे ज्यादा तो कभी होते ही नहीं थे। औसत तो यही था, तीन बच्चों का। और २७ बच्चे मरते थे। फिर २७ बच्चों के मरने पर तीन बच्चों के होने का सुख भी समाप्त हो जाता था। तो, हमने व्यवस्था कर ली की हमने मृत्यु-दर को कम कर लिया, वह भी हमने परमात्मा के नियमों को खोज कर किया। वे नियम भी कोई आदमी के बनाये नियम नहीं हैं। अगर बच्चे मर जाते थे तो वे भी हमारे नियम की नासमझी के कारण मरते थे। हमने नियम खोज लिये हैं, बच्चे ज्यादा बचा लेते हैं। बच्चे जब हम ज्यादा बचा लेते हैं तो सवाल खड़ा हुआ कि **इतने बच्चों के लिए इस पृथ्वी पर सुख की व्यवस्था हम कर पायेंगे?** इतने बच्चों के लिए सुख की व्यवस्था इस पृथ्वी पर नहीं की जा सकती।

बुद्ध के समय में हिन्दुस्तान की आबादी दो करोड़ थी, आज हिन्दुस्तान की आबादी ५० करोड़ के ऊपर है। **जहां दो करोड़ लोग खुशहाल हो सकते थे, वहां ५० करोड़ लोग कीड़े-मकोड़ों की तरह मरने** लगेंगे और परेशान होने लगेंगे; **क्योंकि जमीन नहीं बढ़ती, जमीन के उत्पादन की क्षमता नहीं बढ़ती।** आज पृथ्वी पर साढ़े तीन अरब लोग हैं, यह संख्या इतनी ज्यादा है कि पृथ्वी संपन्न नहीं हो सकती। इतनी संख्या के होते हुए भी हमने मृत्यु-दर रोक ली है। उस वक्त हमने न कहा कि भगवान् चाहता है कि दस बच्चे पैदा हों और नौ मर जायें, अगर हम उस वक्त कहते तो भी बात ठीक थी, उस वक्त हम राजी हो गये। लेकिन अब हम कहते हैं कि हम बच्चे पैदा करेंगे; क्योंकि भगवान् दस बच्चे देता है। जब **यह तर्क बेईमान तर्क है। इसका भगवान् से, धर्म से कोई संबंध नहीं है।** जब

हम दस बच्चे पैदा करते थे और नौ बच्चे मरते थे, तब भी हमें यही कहना चाहिए था कि भगवान् नौ बच्चे मारता है, हम न बचायेंगे। हम दवा न करेंगे, हम इलाज न करेंगे, हम चिकित्सा की व्यवस्था न करेंगे।

चिकित्सा की व्यवस्था, इलाज, दवाएँ सबकी खोज हमने की, जो कि बिलकुल उचित ही है और इससे निश्चित हो भगवान् आशीर्वाद देगा; क्योंकि भगवान् बीमारी का आशीर्वाद देता हो, और इतने बच्चे पैदा हों और उनमें अधिकतम मर जायें, इसके लिए उसका आशीर्वाद हो, ऐसी बात जो लोग करते हैं वे धार्मिक नहीं हो सकते। वे तो भगवान् को भी क्रूर, हत्यारा और बुरा सिद्ध कर देते हैं। अगर बच्चे मरते थे तो हमारी नासमझी थी, **अब हमने समझ बढ़ा ली, अब बच्चे बचेंगे। अब हमें दूसरी समझ बढ़ानी पड़ेगी कि कितने बच्चे पैदा करें।** मृत्यु-दर जब हमने कम कर ली तो हमें जन्म-दर भी कम करनी पड़ेगी, अन्यथा नौ बच्चों के मरने से जितना दुःख होता था, दस बच्चों के बचने से उससे कई गुना ज्यादा दुःख जमीन पर पैदा हो जायेगा।

२७ परिवार नियोजन की धारणा मंगलमय एवं पूर्णतः धार्मिक

आदमी स्वतंत्र है अपने दुःख और सुख की खोज में, यह आदमी की बुद्धिमत्ता पर निर्भर है कि वह कितना सुख अर्जित करे या कितना दुःख अर्जित करे। तो, अब जरूरी हो गया है कि हम बच्चे कम पैदा करें, ताकि अनुपात वही रहे जो कि पृथ्वी संभाल सकती है। और बड़े मजे की बात यह है कि हम भगवान् का नाम लेते हैं तो यह भूल जाते हैं कि अगर भगवान् बच्चे पैदा कर रहा है तो बच्चों को रोकने की जो कल्पना, जो ख्याल पैदा हो रहा है, वह कौन पैदा कर रहा है? अगर डॉक्टर के भीतर से भगवान् बच्चे को बचा रहा है तो डॉक्टर के भीतर से उन बच्चों को आने से रोक भी रहा है, जो कि पृथ्वी को कष्ट में, दुःख में डाल देंगे। अगर सभी कुछ भगवान् का है, तो यह परिवार नियोजन का ख्याल भी भगवान् का ही है। और, मनुष्य की यह आकांक्षा कि हम अधिकतम सुखी हों, यह भी इच्छा भगवान् की ही है। अधिकतम सुख चाहिए तो परिवार का नियमन चाहिए। परिवार नियोजन का और कोई अर्थ नहीं है, उसका अर्थ उतना ही है कि पृथ्वी कितने लोगों को सुख दे सकती है, भोजन दे सकती है, उससे ज्यादा लोगों को पृथ्वी पर खड़े करना अपने हाथ से पृथ्वी को नरक बनाना है। पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है, नर्क भी बन सकती है। और, यह आदमी के हाथ में है।

२८ मृत्यु दर में कमी के साथ-साथ जन्म-दर में भी करना बुद्धिमत्तापूर्ण

जब तक आदमी ना-समझ था तो प्रकृति की अंधी शक्तियाँ काम करती थीं। बच्चे कितने ही पैदा कर लो, मर जाते थे। बीमारी आती थी, महामारी आती थी, प्लेग आती थी, मलेरिया आता था और बच्चे विदा हो जाते थे। युद्ध होता, अकाल पड़ता, भूकम्प होते, और बच्चे विदा हो जाते थे। मनुष्य ने प्रकृति की ये सारी विध्वंसक शक्तियों पर बहुत दूर तक कब्जा पा लिया। प्लेग नहीं होगी, महामारी नहीं होगी, मलेरिया नहीं होगा, 'माता' नहीं होगी, अकाल में हम बच्चे मरने न देंगे। पिछला अकाल जो बिहार में पड़ा, उसमें अनुमान था कि कोई दो करोड़ लोगों की मृत्यु हो जायगी; लेकिन मरे केवल ४० आदमी। तो अकाल भी जिन लोगों को मार सकता था उनको भी हमने सब भांति बचा लिया। **तो हमने प्रकृति की विध्वंसक शक्ति पर तो रोक लगा दिया, और उसकी सृजनात्मक शक्ति पर अगर हम उसी अनुपात में रोक न लगायें तो हम प्रकृति का संतुलन नष्ट करने वाले सिद्ध होंगे।**

परमात्मा के खिलाफ कोई काम हो सकता है तो यह है कि प्रकृति का संतुलन नष्ट हो जाय। तो, जो लोग आज संख्या बढ़ा रहे हैं, जमीन की क्षमता से ज्यादा, वे लोग परमात्मा के खिलाफ काम कर रहे हैं। क्योंकि, परमात्मा का संतुलन बिगाड़े दे रहे हैं। प्रकृति का संतुलन बचेगा अगर प्रकृति की सृजनात्मक शक्तियों पर भी उसी अनुपात में रोक लगा दे जिस अनुपात में विध्वंसक शक्तियों पर रोक लगा दी है, तो अनुपात वही होगा, और यह सुखद है बजाय इसके कि बच्चे पैदा हों और मरें बीमारी में, अकाल में, भूकम्प में, युद्ध में, इससे ज्यादा उचित है कि वे पैदा ही न हों। क्योंकि, पैदा होने के बाद मरना, मारना, मरने देना अत्यंत दुखद है, न पैदा करना कतई दुखद नहीं है।

२९ परिवार नियोजन परमात्मा का काम है

इसलिए मैं यह कतई नहीं मानता हूँ कि परिवार-नियोजन कोई परमात्मा के खिलाफ बात है। बल्कि, मैं यह मानता हूँ कि इस वक्त जिनके भीतर से परमात्मा थोड़ी बहुत आवाज दे रहा है—वे यह कहेंगे कि **परिवार नियोजन परमात्मा का काम है, निश्चित ही परमात्मा का काम हर युग में बदल जाता है।** क्योंकि, कल जो परमात्मा का काम था, जरूरी नहीं कि वह आज भी वही हो। युग बदलता है,

परिस्थिति बदल जाती है तो काम भी बदल जाता है। अब सारी परिस्थितियाँ बदल गयी हैं और आदमी के हाथ इतनी शक्ति आ गयी है कि वह पृथ्वी को अत्यंत आनंदपूर्ण बना सकता है। सिर्फ एक चीज की रुकावट हो गयी है कि संख्या अत्यधिक हो गयी है, तो पृथ्वी नष्ट हो जायेगी और बहुत-से प्राणी भी अपनी बहुत संख्या करके मर चुके हैं, आज उनका अवशेष भी नहीं मिलता। मनुष्य भी मर सकता है। **इस समय वही मनुष्य धार्मिक है जो मनुष्य की संख्या कम करने में सहयोगी हो रहा है।** इस समय परमात्मा की दिशा में और मनुष्य की सेवा की दिशा में इससे बड़ा कोई कदम नहीं हो सकता ! इसलिए धार्मिक-चित्त तो यही कहेगा कि परिवार नियोजन हो ! हाँ, यह हो सकता है कि हम ऐसे बेईमान लोग हैं कि जो हमें करना होता है उसके लिए हम भगवान् का सहारा खोज लेते हैं। और, जो हमें नहीं करना होता उसके लिए हम भगवान् के सहारे की बात नहीं करते। जब हमें बीमारी होती हैं तब हम अस्तपाल जाते हैं, तब हम यह नहीं कहते कि बीमारी भगवान् ने भेजी है, कैंसर, टी. बी. भगवान् ने भेजे हैं। तब हम डाक्टर को खोजते हैं और जब डाक्टर हमें खोजता हुआ आता है और कहता है इतने बच्चे नहीं, तब हम कहते हैं कि ये तो भगवान् के भेजे हुए हैं। तो, हमें इन दो में से कुछ एक तय करना होगा कि बीमारी भी भगवान् की भेजी हुई है—मलेरिया भी, महामारी भी, प्लेग भी, अकाल भी, तब हमें इनमें मरने के लिए तैयार होना चाहिए। और, अगर हम कहते हैं कि ये भगवान् के भेजे नहीं हैं, हम इनसे लड़ेंगे तो फिर हमें निर्णय लेना होगा कि फिर बच्चे भी जो हम कहते हैं—भगवान् के भेजे हैं, उन पर हमें नियंत्रण करना जरूरी है। मुझे एक घटना याद आती है।

इथोपिया में बड़ी संख्या में बच्चे मर जाते हैं, तो इथोपिया के सम्राट ने एक अमेरिकन डाक्टरों के मिशन को बुलाया और जाँच-पड़ताल करवाई कि क्या कारण है, तो पता चला कि इथोपिया में जो पानी पीने की व्यवस्था है वह गंदी है, और पानी जो है वह रोगाणुओं से भरा है, और लोग सड़क के किनारे के गंदे डबरों का ही पानी पीते रहते हैं। उसी में सब मल-मूत्र भी बहता रहता है और उसका पानी पीते हैं। वही उनकी बीमारियों और मृत्यु का बड़ा कारण है। साल भर की मेहनत के बाद उनके मिशन ने रिपोर्ट दी सम्राट को और कहा कि पानी पीने की यह व्यवस्था बन्द करवाइये, सड़क के किनारों के गड्ढों का पानी पीना बंद करवाइये और पानी की कोई नयी वैज्ञानिक व्यवस्था करवाइये। तो इथोपिया के सम्राट ने कहा कि मैंने समझ ली आपकी बातें और कारण भी समझ

लिया; लेकिन मैं यह नहीं करूँगा। क्योंकि, आज अगर हम यह इंतजाम कर लें, आदमियों की बीमारी से बचने का, तो फिर कल इन्हीं लोगों को समझाना मुश्किल होगा कि परिवार नियोजन करो। इथोपिया के सम्राट ने कहा—यह दोहरी झंझट हम न लेंगे। पहले हम इनको यह समझायें कि तुम गंदा पानी मत पियो, इसमें झंझट झगड़ा होगा, बामुश्किल बहुत खर्च करके हम इनको राजी कर पायेंगे, तब जनसंख्या बढ़ेगी, तब हम इन्हें समझायेंगे दुबारा कि तुम बच्चे कम पैदा करो। तब उसने कहा इससे ये जो हो रहा है, वही ठीक हो रहा है।

मैं भी समझता हूँ कि यदि भगवान् पर छोड़ना है तो फिर इथोपिया का सम्राट ठीक कहता था, तो फिर हमें भी इसी के लिए राजी होना चाहिए। अस्तपाल बंद, लोग गंदा पानी पियें, बीमारी में रहें—फिर हम सब भगवान् पर छोड़ दें—जितने जियें, जियें। इतना जरूर कहे देता हूँ कि भगवान् के हाथ में छोड़कर इतने आदमी दुनिया में कभी न बचे थे जितने आदमी ने अपने हाथ में लेकर बचाये, इतने आदमी भगवान् के हाथ में छोड़कर कभी न बचते। इसलिए, जब हमने विध्वंस की शक्तियों पर रोक लगा दी तो हमें सृजन की शक्तियों पर भी रोक लगाने की तैयारी दिखानी चाहिए ! और, इस तैयारी में परमात्मा का कोई विरोध नहीं हो रहा है। और, न इसमें कोई धर्म का विरोध हो रहा है; क्योंकि धर्म है ही इसीलिए कि मनुष्य अधिकतम सुखी कैसे हो, इसका इंतजाम, इसकी व्यवस्था करनी है।

● **प्रश्नकर्ता** : भगवान् श्री, एक और प्रश्न है कि परिवार नियोजन जैसा अभी चल रहा है उसमें हम देखते हैं कि हिन्दू ही उसका प्रयोग कर रहे हैं और बाकी और धर्मों के लोग ईसाई, मुसलिम, ये इसका कम उपयोग कर रहे हैं, तो ऐसा हो सकता है कि उनकी संख्या थोड़े वर्षों के बाद इतनी बढ़ जाय कि एक और पाकिस्तान मांग लें और तुर्किस्तान मांग लें और कुछ ऐसी मुश्किलें खड़ी हो जायँ। फिर पाकिस्तान या चीन है, वहां जनसंख्या पर रुकावट नहीं है, तो उसमें अधिक लोग हो जायेंगे और वे हम पर हमला करने की चेष्टा रखते हैं तो हमारी जनसंख्या कम होने से हमारी ताकत कम हो जाय। तो, इसके बारे में आपके क्या ख्याल हैं ?

३० देश की ताकत अब जनसंख्या पर नहीं, मशीन विकास पर आधारित

भगवान् श्री : इस संबंध में दो तीन बातें ख्याल में रखने की हैं। पहली बात तो यह कि **आज के वैज्ञानिक युग में जनसंख्या का कम होना शक्ति का कम होना नहीं है।** हालतें उल्टी हैं, हाल तो यह है कि जिस मुल्क की जनसंख्या जितनी ज्यादा है, वह टेक्नॉलॉजिकल दृष्टि से कमजोर है; क्योंकि इतनी बड़ी जनसंख्या के पालन-पोषण में, व्यवस्था में उसके पास अतिरिक्त सम्पत्ति बचने वाली नहीं है, जिससे वह एटम बम बनाये, हाइड्रोजन बम बनाये, सुपर बम बनाये, और चांद पर जाये। जितना गरीब देश होगा आज वह उतना ही वैज्ञानिक दृष्टि से शक्तिहीन देश होगा। आज तो वही देश शक्ति-सम्पन्न होगा जिसके पास ज्यादा संपत्ति है, ज्यादा व्यक्ति नहीं। **वह जमाना गया जब आदमी ताकतवर था, अब मशीन ताकतवर है** और मशीन उसी देश के पास अच्छी-से-अच्छी हो सकेगी, जिस देश के पास जितनी सम्पन्नता होगी और सम्पन्नता उसी देश के पास ज्यादा होगी, जिसके पास प्राकृतिक साधन ज्यादा और जनसंख्या कम होगी।

तो, पहली तो बात यह है कि **आज जनसंख्या शक्ति नहीं है** और इसलिये भ्रांति में पड़ने का कोई कारण नहीं है। चीन के पास चाहे जितनी जन-संख्या हो' तो भी शक्तिशाली अमेरिका होगा। चीन के पास जितनी भी जनसंख्या हो तो भी छोटा-सा मुल्क इंग्लैंड भी शक्तिशाली है, और जापान-जैसा मुल्क भी शक्तिशाली है। **शक्ति का पूरा का पूरा आधार बदल गया है।** जब आदमी ही एक मात्र आधार था तब तो ये बातें ठीक थीं कि जनसंख्या बड़ा मूल्य रखती थी। **लेकिन अब आदमी से भी बड़ी शक्ति हमने हमने पैदाकर ली है, जो मशीन की है।** मशीन ताकत है और मशीन वही देश पैदा कर सकता है, जो देश जितना ज्यादा सम्पन्न है, और उतना ही सम्पन्न हो सकता है, जितनी ज्यादा जनसंख्या उसकी कम हो—ताकि उसके पास सम्पत्ति बच सके, लोगों को खिलाने, कपड़ा पहिनाने, इलाज कराने के बाद, ताकि उस शक्ति को वैज्ञानिक विकास करने में लगा सकें।

दूसरी बात यह समझने जैसी है कि संख्या कम होने से उतना बड़ा दुर्भाग्य नहीं टूटेगा, जितना बड़ा दुर्भाग्य संख्या के बढ़ जाने से बिना किसी हमले के टूट जायेगा। याने हमले का तो कोई उपाय भी किया जा सकता है कि कोई बड़ा मुल्क हम पर हमला करे तो हम दूसरों से सहायता ले लें; लेकिन हमारे ही बच्चे हमलावर सिद्ध हो जायें संख्या के अत्यधिक बढ़ जाने के कारण तो हम किसी की

सहायता न ले सकेंगे। उस वक्त हम बिल्कुल असहाय हो जायेंगे। इस वक्त **युद्ध इतना बड़ा खतरा नहीं है, जितना बड़ा खतरा है जनसंख्या का विस्फोट है** खतरा बाहर नहीं है कि हमें कोई मार डाले, वरन् जो हमारी उत्पादन क्षमता है बच्चों की, वही हमारे लिए सबसे बड़ा खतरा है कि संख्या इतनी हो जाये कि हम सिर्फ मर जायें इस कारण से कि न पानी हो, न भोजन हो, न रहने को जगह!

३१ जातीय संख्या की नहीं—फिक्र करनी है मुल्क के प्रतिमा की

तीसरी बात यह कि जो हम सोचते हैं कि हिन्दू अपनी संख्या कम कर लें तो मुसलमान से कम न हो जायँ, तो इस डर से हिन्दू भी अपनी संख्या कम न करें, मुसलमान भी इस डर से अपनी संख्या कम न करें कि कहीं हिन्दू ज्यादा न हो जायें, ईसाई भी यही डर रखें, जैन भी यही डर रखें, सिक्ख भी यही डर रखें, तो इन सबके डर एक से हैं। तब परिणाम यह होगा कि मुल्क ही मर जायेगा। तो, यह डर किसी को तो तोड़ना शुरू करना पड़ेगा। और, जो समाज इस डर को तोड़गा वह सम्पन्न हो जायेगा, शीघ्र। अगर हिन्दू इस डर को तोड़ देते हैं पहिले तो सम्पन्न हो जायेंगे। मुसलमानों से उनके बच्चे ज्यादा स्वस्थ्य, ज्यादा शिक्षित होंगे, ज्यादा अच्छे मकानों में रहेंगे। वे दूसरे समाजों को जिनकी संख्या कीड़े मकोड़ों की तरह बढ़ेगी, उनको पीछे छोड़कर आगे निकल जावेंगे। और, इसका परिणाम यह भी होगा कि दूसरे समाजों में भी स्पर्धा पैदा होगी इस ख्याल से कि वे गलती कर रहे हैं।

आज दुनिया में यह बड़ा सवाल नहीं है कि हिन्दू कम हो गये तो कोई हर्ज हो रहा है, कि मुसलमान ज्यादा हो गये तो उनको कोई फायदा हो रहा है। बड़ा सवाल यह है कि अगर इन सारे लोगों के दिमाग में यही ख्याल भरा रहे तो यह पूरा मुल्क मर जायेगा। अगर यही विकल्प है कि हिन्दू कम हो जायेंगे और इससे हिन्दुओं की संख्या को नुकसान पहुँचेगा, मुसलमान ज्यादा हो जायेंगे, ईसाई ज्यादा हो जायेंगे **तो भी मैं कहूंगा की हिन्दू अपने को कम कर लें और भारत को बचाने का श्रेय ले लें**—चाहे खुद मिट जायें। हालांकि इसकी कोई सम्भावना नहीं है, तो भी मैं कहूंगा कि मेरे लिए यह इतना बड़ा सवाल नहीं है—हिन्दू-मुसलमान का, जितना बड़ा मेरे लिए एक दूसरा सवाल है।

जब तक हम परिवार नियोजन को स्वेच्छा पर छोड़े हुये हैं तब तक खतरा एक दूसरा है कि जो जितना शिक्षित और उन्नत है, जो जितना सम्पन्न है,

जिसकी बुद्धि विकसित है वह तो राजी हो जाएगा स्वभावतः। वह तो आज परिवार नियोजन के लिए राजी हो जायेगा, सिर्फ बुद्धुओं को छोड़कर बुद्धिमान तो राजी होंगे ही; क्योंकि परिवार **नियोजन से उसके बच्चे ज्यादा सुखी होंगे, ज्यादा सम्पन्न होंगे, ज्यादा शिक्षित** होंगे, लेकिन खतरा यह है कि जो बुद्धिहीन वर्ग है--उसको न कोई शिक्षा है, न कोई ज्ञान है, न कोई सवाल है--वे समझ ही न पायें और बच्चे पैदा करते चले जायें तो जो नुकसान हो सकता है लम्बे अर्थों में, वह यह हो सकता है कि **अशिक्षित, अविकसित पिछड़े हुए लोग ज्यादा बच्चे पैदा करें और शिक्षित व सम्पन्न लोग कम बच्चे पैदा करें तो मुल्क की प्रतिभा को ज्यादा नुकसान पहुंचे।** यह हो सकता है। इसलिये मेरी यह मान्यता है कि परिवार नियोजन की बात धीरे-धीरे अनिवार्य हो जानी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि बुद्धिमान तो स्वीकार कर लें और गैर-बुद्धिमान न करें, तो वह अनिवार्य होना चाहिए। इसलिए **मैं अनिवार्य-परिवार-नियोजन के पक्ष में हूं। परिवार-नियोजन किसी की स्वेच्छा पर नहीं छोड़ा जा सकता है।** यह तो ऐसा ही है कि जैसे हम हत्या को स्वेच्छा पर छोड़ दें कि जिसको करना हो करें जिनको न करना हो न करें--डाके को स्वेच्छा पर छोड़ दें कि जिसको डाका डालना हो डाले, न डालना हो न डाले, सरकार समझाने की कोशिश करेगी और देखती रहेगी। **डाका भी आज उतना खतरनाक नहीं है, हत्या भी आज उतनी खतरनाक नहीं है, जितना जनसंख्या का बढ़ना।**

३२ बुद्धिहीन बच्चे बढ़ायें और बुद्धिमान संतति-नियमन करें यह खतरनाक है

इस जीवन्त सवाल को इस तरह स्वेच्छा पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। और जब हम इसे स्वेच्छा पर नहीं छोड़ते तो यह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई का सवाल नहीं रह जाता। क्योंकि, सिक्ख को उसका गुरु समझा रहा है कि तुम कम हो जाओगे, मुसलमान ज्यादा हो जायेंगे। मुसलमान को मौलवी समझा रहा है कि तुम कम हो जाओगे, हिन्दू ज्यादा हो जायेंगे। वही ईसाई पादरी भी सोच रहा है, वही हिन्दू पंडित भी सोच रहा है। ये सब जो सोच रहे हैं इनकी सोचने की वजह भी अनिवार्य परिवार-नियोजन से मिट जायेगी। **यदि हम परिवार-नियोजन कर देते हैं तो कोई हिन्दू, मुसलमान, ईसाई का सवाल नहीं रह जाता है।** मेरे लिए तो सवाल यह है कि सैकड़ों वर्षों में कुछ लोग विकसित हो गये हैं और कुछ लोग अविकसित रह गये हैं। **जो अविकसित वर्ग है, वह बच्चे ज्यादा**

छोड़ जाये तो देश की प्रतिभा और बुद्धिमत्ता को भारी नुकसान पहुंच सकता है, बुद्धिमत्ता को भारी नुकसान पहुंच सकता है। और वह नुकसान खतरनाक सिद्ध हो सकता है। इसलिए उस दृष्टि से मैं सारे सवाल को सोचता हूं कि केवल परिवार नियोजन ही न हो, बल्कि ऐसा लगता है कि वह अनिवार्य हो। एक भी व्यक्ति सिर्फ इसलिए न छोड़ा जा सके कि वह राजी नहीं है। और यह हमें करना ही पड़ेगा, इसे बिना किये हम इन आने वाले ५० वर्षों में जिन्दा नहीं रह सकते।

शक्ति के सारे माप-दंड बदल गये हैं, यह हमें ठीक से समझ लेना चाहिए। आज शक्तिशाली वह है जो संपन्न है और संपन्न वह है जिसके पास जनसंख्या कम है और उत्पादन के साधन ज्यादा हैं। **आज मनुष्य न तो उत्पादन का साधन है, न शक्ति का साधन है। आज मनुष्य सिर्फ भोक्ता है, 'कन्जुमर' है।** मशीन पैदा करती है, जमीन पैदा करती है, मनुष्य खा रहा है। और धीरे-धीरे जैसे-जैसे टेक्नॉलॉजी विकसित होती है, आदमी की शक्ति का सारा मूल्य समाप्त हुआ जा रहा है, आदमी न हो तो भी चल सकता है। एक लाख आदमी जिस फैक्टरी में काम करते हों, उसे एक आदमी चला सकेगा और हिरोशिमा में एक लाख आदमी मारना हो तो उन्हें एक आदमी मार सकेगा। पुराने जमाने में तो कम से कम एक लाख आदमी ले जाने पड़ते, अब तो कोई एक आदमी जाता है और एटम बम गिराकर उनको समाप्त कर देता है। कल यह भी हो सकता है कि एक आदमी को भी न जाना पड़े। कम्प्युटराइज्ड आदेश, एक आदमी भर देगा मशीन में और काम हो जायेगा। आदमी की संख्या बिलकुल महत्त्वहीन हो गयी है।

यह जरूरी नहीं है कि मेरी सारी बातें मान ली जायें। इतना ही काफी है कि आप मेरी बात पर सोचें, विचार करें। अगर इस देश में सोच-विचार आ जाय तो शेष चीजें अपने आप छाया की तरह पीछे चली आयेंगी।

मेरी उपर्युक्त बातें ख्याल में लें और उस पर सूक्ष्मता से विचार करें तो हो सकता है कि आपको यह बोध आ जाय कि परिवार-नियोजन की अनिवार्यता कोई साधारण बात नहीं है जिसकी उपेक्षा की जा सके। वह जीवन की अनेक-अनेक समस्याओं की गहनतम जड़ों से संबंधित है। और, उसे क्रियान्वित करने की देरी पूरी मनुष्य जाति के लिये आत्मघातक सिद्ध हो सकती है।

भगवान् श्री रजनीश हिन्दी साहित्य

		मू. रु.			मू. रु.
१	ताओ उपनिषद	४०–००	२१	प्रेम के फूल	५–००
२	महावीर : मेरी दृष्टि में	३०–००	२२	मिट्टी के दिये	५–००
३	महावीर–वाणी	३०–००	२३	बिखरे फूल	१–००
४	निर्वाण उपनिषद्	१५–००	२४	अन्तर्यात्रा	५–००
५	जिन खोजा तिन पाईयां	२०–००	२५	सत्य की खोज	४–००
६	ईशावास्योपनिषद्	१२–००	२६	समाजवाद से सावधान	४–००
७	प्रेम है द्वारा प्रभु का	९–००	२७	पथ के प्रदीप	३–००
८	घाट भुलाना बाट बिनु	७–००	२८	मैं कौन हूं ?	३–००
९	समुन्द समाना बुंद में	७–००	३०	क्रान्ति की वैज्ञानिक प्रक्रिया	१–५०
१०	सूली ऊपर सेज पिया की	७–००	३१	प्रेम और विवाह	१–५०
११	सत्य की पहली किरण	६–००	३२	विद्रोह क्या है ?	१–५०
१२	मैं कहता आँखन देखी	६–००	३३	प्रगतिशील कौन ?	१–५०
१३	अन्तर्वीणा	६–००	३४	ज्योतिष अर्थात् अध्यात्म	१–५०
१४	ढाई आखर प्रेम का	६–००	३५	ज्योतिष : अद्वैत का विज्ञान	१–५०
१५	संभावनाओं की आहट	६–००	३६	सिंहनाद (नया नाम "पथ की खोज" संशोधित संस्करण)	२–००
१६	संभोग से समाधि की ओर	६–००	३७	धर्म और राजनीति	१–००
१७	साधना–पथ	५–००	३८	युवक और यौन	१–००
१८	अहिंसा दर्शन	१–००	३९	नव संन्यास क्या?	७–००
१९	गहरे पानी पैठ	५–००	४०	मुल्ला नसरुद्दीन	५–००
२०	अमृत कण	१–००			

पुस्तकें मिलने का पता :—

जीवन जागृति केन्द्र

३१, इजराइल मोहल्ला, भगवान भुवन, मस्जिद बंदर रोड, बम्बई–९.
फोन : ३२७६१८/२१

A–१, वुडलेन्ड अॅपार्टमेंट, पेडर रोड, बम्बई–२६.
फोन : ३८११५९
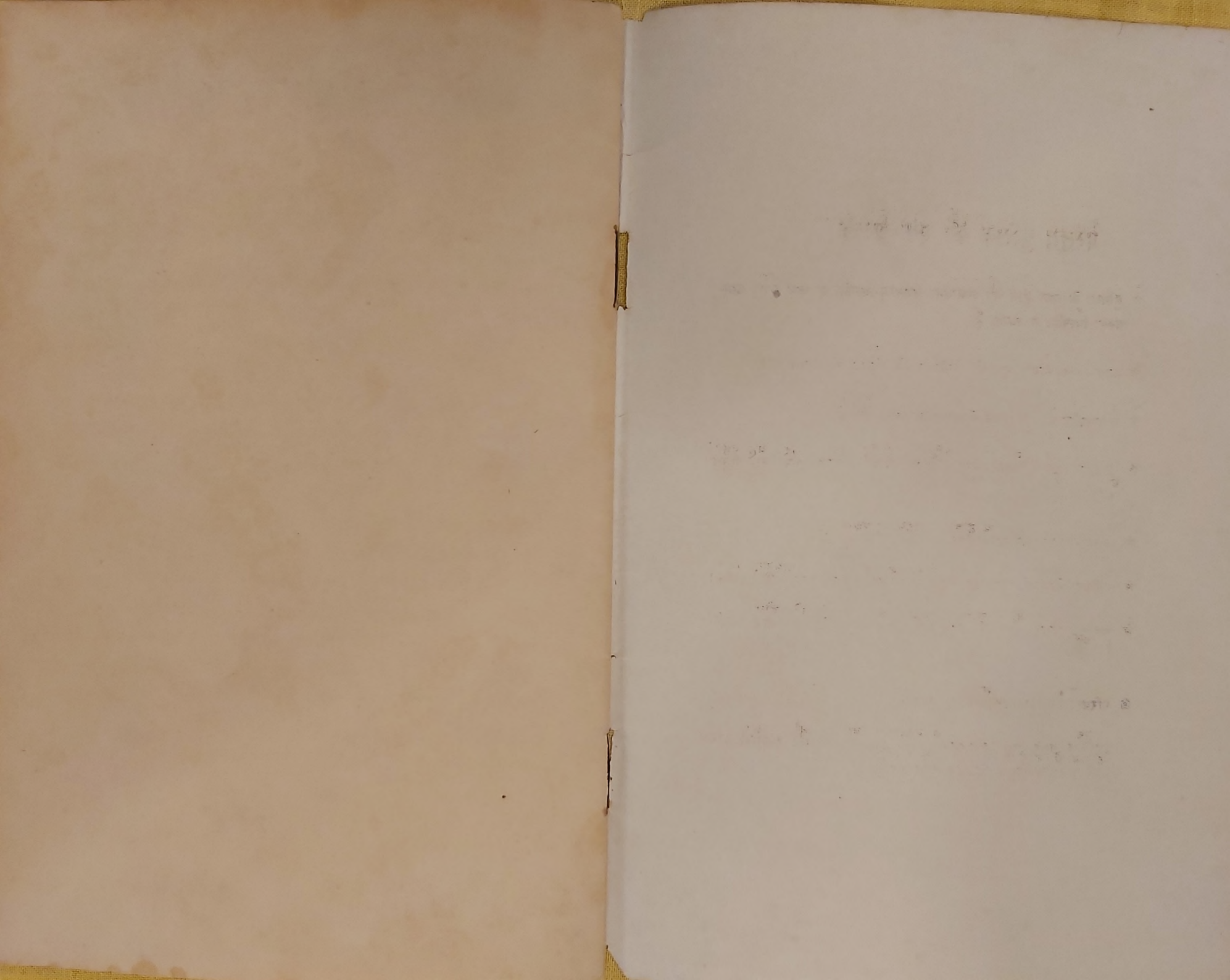
प्रस्तुत पुस्तक की एक झलक

☆ दुनिया के नष्ट होने की संभावना परमाणु-विस्फोट से कम वरन् जन-संख्या विस्फोट से ज्यादा है।

☆ अधिक बच्चे अर्थात् दुख को, दरिद्रता को, दीनता को आमंत्रण।

☆ प्रतिभाहीन व रूग्ण बच्चों के जन्म पर सख्त रोक हो।

☆ बुद्धिहीन बच्चे बढायें और बुद्धिमान संतति–नियमन करें, यह बहुत खतरनाक है।

☆ संतति–नियमन अनिवार्य होना चाहिये, ऐच्छिक नहीं

☆ गर्भाधान के लिये श्रेष्ठ वीर्य कणों का चुनाव––अत्यंत महत्वपूर्ण कदम।

☆ संतति–नियमन और कृत्रिम–गर्भाधान से मनुष्य के पूरे जीवन–दर्शन में क्रांति।

☆ परिवार नियोजन परमात्मा का काम है।

उपरोक्त सभी तथा अन्य अनेक बातों का भगवान् श्री रजनीश द्वारा गहन व चेतवानीपूर्ण विवेचन भीतर पढ़िये।